सुरभि

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा)
एवं कार्यालय महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखा परीक्षा),
ओड़िशा, भुवनेश्वर

सत्यमेव जयते

सुरभि

2013

(अंक-अष्टम्)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा),
कार्यालय महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा),
ओड़िशा, भुवनेश्वर

सुरभि परिवार

परामर्शदातृ समिति

प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)
महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)
उपमहालेखाकार/प्रशासन (सा.एवं सा.क्षे.लेप.)
उपमहालेखाकार / प्रशासन (आ.एवं रा.क्षे.लेप.)

संपादक मंडल

● प्रधान संपादक	श्री दीपक रघु	(उप महालेखाकार (प्रशासन)
● सह संपादक	श्री दीपक महान्ति	(लेखा परीक्षा अधिकारी)
● सह संपादक	श्री पूर्णानन्द त्रिपाठी	(लेखा परीक्षा अधिकारी)
● सह संपादक	श्री रोहित कावा	(सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी)
● सह संपादक	श्री नृसिंह चरण राउत	(सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी)
● सह संपादक	श्री अशोक कुमार	(हिन्दी अनुवादक)
● सह संपादक	श्री प्रफुल केरकेट्टा	हिन्दी अनुवादक)

संदेश

श्री सुनील दाढे
प्रधान महालेखाकार (आ.एवं रा.क्षे.लेप.)

''सुरभि'' का ८वां अंक सस्नेह प्रस्तुत है ।

पत्रिका के प्रकाशन का लक्ष्य राजभाषा हिन्दी के माध्यम से कार्य करने हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रोत्साहितत करना है । हिन्दी हमारी राजभाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय पहचान भी है । इस पहचान को अपनाने में यह पत्रिका सहायक होगी । कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारियों को अपने भाव हिन्दी में व्यक्त करने का अवसर देकर ''सुरभि'' राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देती है ।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूं जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना योगदान दिया है । उम्मीद करता हूं कि ''सुरभि'' भविष्य में भी हमारे कार्यालय की साहित्यिक प्रतिमा उंचाने हेतु सभी को प्रोत्साहन देती रहेगी ।

मेरी शुभकामना है कि ''सुरभि'' हिन्दी पत्रिकाओं में अग्रसर होती रहेगी ।

सुनील दाढे
प्रधान महालेखाकार
आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा, ओड़िशा

संदेश

श्री अमर पटनायक
महालेखाकार (सा.एवं सा.क्षे.लेप.)

यह अत्यन्त हर्ष एवं गौरव का विषय है कि हिन्दी पत्रिका ''सुरभि'' का यह 8 वा अंक है । यह पत्रिका हिन्दी प्रचार-प्रसार एवं विकास में एक उल्लेखनीय कदम है । मैं इस पत्रिका के माध्यम से ''सुरभि'' के सभी रचनाकारों पाठकों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिन्दी पत्रिका न केवल हिन्दी के प्रचार-प्रसार का काम करती है बल्कि कार्यालय में रचनात्मक वातावरण तैयार करने एवं अधिकारियों/कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति रुझान एवं रुचि उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है । हिन्दी पत्रिका के अनवरत प्रयास प्रकाशन से कर्मचारियों को अपनी प्रतिभाएं निखारने का भूरपूर अवसर प्राप्त होता है । राजभाषा हिन्दी की सांस्कृतिक चेतना विभागीय पत्रिका में सकारात्मक एवं रचनात्मक भूमिका निभाती है । प्रयोग द्वारा ही भाषा का विकास व विस्तार होता है ।

मैं ''सुरभि'' के अष्टम अंक के सफल प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

अमर पट्नायक
महालेखाकार (सा.एवं.सा.क्षे.लेप.)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

संपादकीय

श्री दीपक रघु
उप महालेखाकार (प्रशासन)

हिन्दी पत्रिका के अष्टम अंक को पाठको के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे असीम आनन्द की अनुभूति हो रही है । हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान करें और खुद सम्मानित महसूस करें । इस प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए कर्मचारियों/अधिकारियों का अधिक से अधिक प्रोत्साहन देना है जिसमें सकारात्मक सफलता भी मिल रही है । हिन्दी कार्यक्रमों में बढती भीड़, हिन्दी प्रतियोगिताओं मं कार्यालय के कर्मचारी अधिक से अधिक भाग ले रहे है । पत्रिका के माध्यम से राष्ट्रभाषा के प्रति जाग्रति रूचि को बरकरार रखने का प्रयास किया जा रहा है । मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाएगी । मैं पत्रिका के सम्पादक मण्डल एवं लेखको/कवियों को पत्रिका के सफल सम्पादन के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभ कामनाएं ।

दीपक रघु 26/09/13

दीपक रघु
उप महालेखाकार/प्रशासन
(सा.एवं सा.क्षे.लेप.) ओड़िशा, भुवनेश्वर

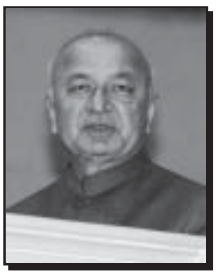

श्री सुशील कुमार शिंदे

गृह मंत्री, भारत

प्रिय देशवासियों,

हिन्दी दिवस के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

भारत की सभ्यता और भाषायी संस्कृती की जड़े गहरीं हैं और ये विविध संस्कृतियों के सम्मिश्रण से गुजरकर सदियों से विकसित हुई हैं । भाषायी विविधता एवं बहु आयामी संस्कृति के बावजूद राजभाषा हिन्दी ने देश के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की धारणा का पुष्ट किया है । हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का सबसे शक्तिशाली एवं प्रभावी माध्यम है ।

विश्व के सभी प्रमुख विकसित एवं विकासशील देश अपनी-अपनी भाषाओं में ही अपना सरकारी कामकाज करके उन्नत हुए हैं । हिन्दी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है । यह देश के अधिकांश लोगों द्वारा पारस्परिक व्यवहार में प्रयुक्त की जाती है । हिन्दी के इसी महत्व को देखते हुए भारतीय संविधान में इसे संघ जनता और सरकारी तंत्र दोनों को अधिक से अधिक संवेदनशील और सक्रिय बनाए जाने की आवश्यकता है ।

हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाने के संवैधानिक उद्दश्यों को पूरा किया जाना सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न सरकारी कार्यालयों में हिन्दी में टिप्पण तथा पत्राचार का पर्याप्त रूप से प्रोत्साहित किया जाए । वास्तविकता में हिन्दी में काम करने के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा कि भाषा को सरल एवं सहज रूप में लिखा जाए ताकि हिन्दी जानने वाले तथा हिन्दी न जानने वाले कर्मचारियों द्वारा यह आसानी से समझी जा सके तथा अपनाई जा सके ।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में विशेषज्ञों की एक उच्चधिखार प्राप्त समिति का गठन किया गया है ताकि विभिन्न विभागों में कर्मचारियों द्वारा सुलभ संदर्भ के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली प्रशासनिक शब्दावली को अभिव्यक्ति के सरल रूपों का प्रयोग करते हुए उन्नत किया जा सके । इस समिति का कार्य इस वर्ष के अंत तक पूरा होने की संभावना है । इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्राहा रूप में भाषा की सुविज्ञता के उद्देश्य के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण होगी ।

केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए कदमों से सकारात्मक परिणाम मिले हैं । राजभाषा विभाग द्वारा सूचना प्रौद्योगिक के क्षेत्र में किए गए प्रयासों से अब कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य करना अधिक सुविधाजनक एवं सरल हो गया है और इसके लिए समय-समय पर आवश्यक निर्देश जारी किए गए हैं । इसी क्रम में राजभाषा विभाग मे वेब आधारित सूचना प्रबंधन प्रणाली विकसित की है । यह सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है कि सभी कम्प्यूटर उपकरणों में हिन्दी में काम करने की सुविधा हो । विभाग द्वारा अन्य उपायों के अलावा हिन्दी में मूल पत्राचार को बढ़ावा देन के लिए कई पुरस्कार योजनाएं भी चलाई जा रही है ।

मैं सभी वरिष्ठ प्रशासकीय अधिकारीयां एवं कार्यालय प्रमुखों से अनुरोध करता हूं कि वे अपने कार्यालयों में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत रुचि लें और स्वयं हिन्दी में कार्य करके अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें । संघ की राजभाषा नीति का आधार सदभावना, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन है किन्तु संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी प्रकार दृढतापूर्वक किया जाना चाहिए जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है ।

आइए, हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर हम यह संकल्प लें कि हम सभी उत्साहपूर्वक और गर्व के साथ अपना कार्य हिन्दी में करेगें और राजभाषा अधिनियम, नियम एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित प्रावधान का अनुपालन करेंगें । मुझे पूरा यकीन है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हम अपना लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेगें और देश में हिन्दी के प्रयोग को अभूतपूर्व नए आयाम देंगे ।

जय हिन्द !

सुशील कुमार शिंदे

नई दिल्ली

14 सितम्बर, 2013

अनुक्रमणिका

क्र.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1.	पानी	श्री घनश्याम पाणिग्राही	10
2.	राष्ट्र का उत्थान एवं साँच का सम्मान	श्री अशोक कुमार	11
3.	यादें	श्री राजीव कुमार	12
4.	पश्चाताप	श्री राजीव कुमार	13
5.	मै तुम्हें क्या दे सकता हूँ ?	श्रीमती मीनाक्षी आचार्य	14
6.	वाणी वन्दना	श्रीमती अखिलेश कुमारी	15
7.	किताब	श्री कमल कृष्ण बिश्वाल	16
8.	मैं कौन हूँ	सुश्री देवयानी बिश्वाल	17
9.	तकदीर की टीस	श्री बिघ्नेश कुमार मिश्र	18
10.	आविर्भाव	श्री बिघ्नेश कुमार मिश्र	19
11.	आज की हकीकत	श्री अशोक कुमार	20
12.	मन्नत	श्रीमती कमला नायक	21
13.	धरती रानी	श्री अखिल जेना	22
14.	जीवन	श्री अखिल जेना	23
15.	भाषाओं की रानी	श्री जीतेन्द्र कुमार	24
16.	समय	श्री रत्नाकर बेहेरा	25
17.	बारिश	श्री नृसिंह चरण राउत	26
18.	लौटा दो मेरा बचपन	श्री दीपु कुमार	27
19.	भारत निर्माण	श्री सुभाष कुमार	28
20.	मेरी धड़कन	श्री शिव प्रसाद चौबे	29
21.	बेरोजगारी	श्रीमती अखिलेश कुमारी	30

22.	युग-धर्म	श्री प्रशान्त कुमार पण्डा	31
23.	प्रारम्भ	श्रीमती कमला नायक	33
24.	समय की कीमत	श्री कृष्ण कुमार	37
25.	अधूरा अस्तित्व	श्रीमती प्रतिमा बेहेरा	39
26.	जीवन का उद्देश्य	श्री दीपु कुमार	44
27.	लालची तोता	श्री कृष्ण कुमार	45
28.	राजभाषा अधिनियम 1963	श्री प्रफुल केरकेट्टा	46
29.	नारी-कल आज और कल	श्रीमती कमला नायक	47
30.	जीवन में संघर्ष	श्री स्तानिसलास किन्डो	52
31.	एक नई सीख	श्री सुरेश चन्द्र महापात्र	54
32.	खरबूजे ने रंग बदला	श्री पी. श्रीनिवास राव	55
33.	सबर का फल	श्रीमती सुदेष्णा दास	57
34.	राजभाषा प्रयोग की दृष्टि से क्षेत्र वर्गीकरण	श्री प्रफुल केरकेट्टा	59
35.	खुशी की कुंजी	श्री मोहम्मद इमरान	60
36.	सुन्दर कौन	श्री मोहम्मद इमरान	62
37.	हमारा देश तब और अब	श्री अविनाश कुमार	63
38.	दूसरा जलिया वाला बाग	श्री शंकर नायक	64
39.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक		66
40.	हिन्दी कार्यशाला		66
41.	कार्यालय समाचार		67

●●●

पानी

घनश्याम पाणिग्राही
सचिव-म.ले.

वही बारिश जो आसमान से आती है,
बूंदों में गाती है,
पहाड़ों से फिसलती है,
नदियों में चलती है,
नहरों में मचलती है,
खपरैलों पर गिरती है,
गलियों में फिरती है,
मोड़ पे सम्हलती है,
फिर आगे निकलती है
वही बारिश
ये बारिश हमेशा गीली होती है,
इसे पानी भी कहते है
इसे वारि, नीर, जीवन, अम्बु, पोय
अमृत भी कहते है,
ये पानी जब आंख से ढलता है,
आँसू कहलाता है,

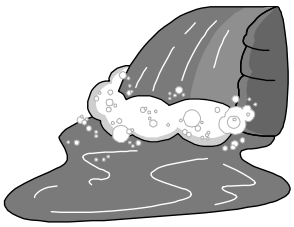

पर जब चेहरे पे चढ़ जाता है तो,
रूबाब बन जाता है
कभी कभी ये पानी,
सरकारी फाइलों में चोरी हो जाता है,
पानी तो पानी है
पानी जिन्दगानी है,
जब रूह की नदी सूखी हो,
मन का हिरन प्यासा हो,
दिमाग में लगी हो आग,
और प्यार की गागर खाली हो,
तब मैं यह हमेशा,
इस बारिश के पानी में
भीगने की राय देता हूँ ।

❐❐❐

राष्ट्र का उत्थान एवं साँच का सम्मान

अशोक कुमार
क.हि.अ.

जब दिशाएं ही विषैली हो गयी हों,
नारियों की मांग मैली हो गयी हो,
असद का आतंक सम्मुख आ खड़ा हो,
और अपनापन अपाहिज हो गया हो,
तो फिर राष्ट्र का उत्थान कैसे हो सकेगा,
साँच का सम्मान कैसे हो सकेगा ।

जब राजनैतिक जहर चढ़ता जा रहा हो,
और भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा हो,
आस्था के दीप बुझने लग गये हो,
ब्यवस्था के बीज सड़ने लग गये हो,
तो फिर राष्ट्र प्रतिभावान कैसे हो सकेगा,
साँच का सम्मान कैसे हो सकेगा ।

जब रोग की रातें बहकने लग गयी हों,
भोग की बातें महकने लग गई हों,
सत्य की परिकल्पना ही बन्द हो,
हर दिशा में द्वेष का ही द्वन्द हो,
फिर राष्ट्र का कल्याण कैसे हो सकेगा,
साँच का सम्मान कैसे हो सकेगा ।

जब द्वेष के बाजार लगने लग गये हों,
धर्म के आधार मिटने लग गये हों,
जिन्दगी धन की पढ़ाई पढ़ रही हो,
कामचोरों की कमाई बढ़ रही हो
राष्ट्र फिर बलवान कैसे हो सकेगा,
साँच का सम्मान कैसे हो सकेगा ।

जब रक्त के रिश्ते लजाए जा रहे हों,
बैर के बाजे बजाए जा रहे हों,
अस्मिता आँचल पसारे रो रही हो,
संविधान की विधा ही सो रही हो,
फिर राष्ट्र ऊर्जावान कैसे हो सकेगा,
साँच का सम्मान कैसे हो सकेगा ।

❐❐❐

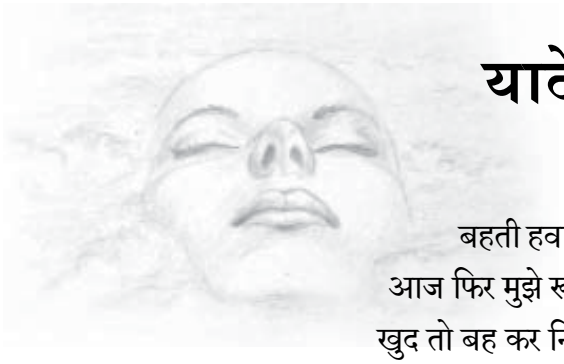

यादें

राजीव कुमार
लेप.

बहती हवा ने,
आज फिर मुझे रूला दिया,
खुद तो बह कर निकल गयी,
मुझे किसी की याद दिला दी,
होठों पे फिर से हँसी लौटी,
न चाहकर भी जमाने से छुपा लिया ।
मेरे मन ने भी खूब किया,
भूले हुए गीत को फिर से गुनगुना लिया ।
ऐसा लगा कि वह पास खड़ी खिलखिला रही थी,
बांहे फैलाकर उसे सीने में छुपा लिया ।
अमावस की रात जैसे पूर्णिमा लग रही थी,
आंखें मूंद कर, मैंने उसे पूर्णिमा ही समझ लिया ।
सीने पे लिपटी सिसक रही थी वह,
उसकी सिसकियों ने पूरे तन-मन को जला दिया ।
चाहता था वक्त ठहर जाए,
कम्बख्त वक्त ने फिर से दगा दिया ।
सुबह की लालिमा पांव पसार रही थी,
भारी मन से मैंने उसे विदा किया ।
पूछना चाहता था मैं खुदा से,
किस बात का मुझे ऐसा सिला दिया ।
माना, वह बहुत प्यारी थी,
वक्त से पहले ही उसे क्यों बुला लिया ।

❐❐❐

पश्चाताप

राजीव कुमार
लेप.

मां, मेरे श्रद्धा सुमन स्वीकार करो,
देखो, अब न इन्कार करो,
वरना रो दूंगा मैं,
याद है तुझे, जब मैं रोता था,
तू रोती थी,
जब मैं हँसता था,
तू हँसती थी,
इसलिये मत इन्कार करो ।
भटक गया था मैं,
तुम्हारे सिखाये रास्तों से,
खो गया था मैं,
सही गलत बोलकर,
आज तेरा बच्चा,
इस अर्जी पर विचार करो,

दुनिया की रंगीनियों में,
समझ न सका तुम्हारे महत्व को,
अहसास हो गया मुझे,
सही और गलत का,
मेरी इस मनोदशा पर विचार करो,
मां, मेरे श्रद्धा सुमन स्वीकार करो ।
हूँ तो तेरा बच्चा ही ना,
चाहे आज मेरे बच्चे हैं,
माफ करती थी ना तू,
मेरी गलतियों को,
पापा से छिपाती थी,
मुझे बचाती थी,
फिर तेरे आंचल की छांव मांग रहा हूँ,
मां मेरे श्रद्धा सुमन स्वीकार करो ।

❐❐❐

मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ ?

श्रीमती मीनाक्षी आचार्य
व.लेप

मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ ?
जो मिला था मुझे विरासत में,
हरियाली से भरा खुला मैदान,
दिग से दिगंत तक फैला आकाश,
अमृत सा मीठा पीने का पानी,
और जीवन की प्यारी ताजी हवा ।
भीषण गर्मी में पीपल का छाँव,
बादल के गरजने से माँ का ऑचल,
सर्द की रातों में नानी की कहानी,
बसंत के आगमन पर कोयल का गान।
मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ,
जो मिला था मुझे विरासत में,
सज्जन गुरुजनों का सम्मान करना,
आशीषों का मोल हीरों से भी उपर रखना ।

उन पगडंडियों को याद रखना,
जो बने थे कभी उन लोगों की,
पैरों के निशानों से।
जिन्होंने उन राह पर चल कर,
जहाँ कभी राह नहीं थी,
कांटों-कंकरों से घायल,
अपने जख्मी पैरों की परवाह न करते हुए,
बनाते चले गये वो रास्ते,
जिन पर चलते समय,
हमारे पैरों में छाले न पड़े।
मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ,
जो मिला था मुझे विरासत में।

❐❐❐

वाणी वन्दना

अखिलेश कुमारी
पत्नी अशोक कुमार, क.हि.अ.

छाँव ममता की मिले माँ,
भक्ति की अनुरक्ति, दे माँ ।
अन्धकारों को, भगा दो,
तार वीणा के बजा दो ॥
शब्द का सरगम सजाकर,
ज्ञान का दीपक जला दो ॥
मुक्ति दे, निज शक्ति दे माँ ,
भाव की अभिव्यक्ति दे माँ ।
छाँव, ममता की मिले माँ
भक्ति की अनुरक्ति, दे माँ ॥
छन्द सा, स्वछन्द कर दे,
द्वेष का स्वर, बन्द कर दे ।
भाव का उपहार लेकर,
गीत-गति दे, राग भर दे ॥
हर्ष दे, उत्कर्ष दे माँ ।
सृजन की ही, शक्ति दे माँ ।
छाँव, ममता की मिले माँ,
भक्ति की अनुरक्ति, दे माँ ॥
विचलित मन, शान्त कर दे,
भय मिटाकर क्रान्ति भर दे ।
नेह-चिन्तन ही लक्ष्य हो,
भक्त का अमरत्व दे दे ॥
ज्ञान दे, विज्ञान दे माँ,
सुगति दे, कुछ ध्यान दे माँ ।
छाँव, ममता की मिले माँ,
भक्ति की अनुरक्ति, दे माँ ॥

❐❐❐

किताब

कमल कृष्ण बिश्वाल
ले.प.

किताब है छोटा, मगर है अमूल्य,
जिससे मानव करता है ज्ञान वसूल ।
किताब बनाता है समाज, सिखाता है मानव धर्म,
अतीत की कथाओं से भरपूर है जिसमें ज्ञान ।
किताब है साधना, किताब है ज्ञान,
पढ़-सुन कर मानव बनता है महान ।
किताब है माता पिता और भगवान,
सिखाती है प्यार-मुहब्बत, न्याय और दर्शन ।
किताब है एक सच्चा दोस्त निराला,
दुःख-सुख में दिखाती है पथ उजाला ।
किताब एक, मगर है रूप-भाषा बहुल,
कभी वेद, कुरान तो कभी बाईबल ।
किताब चलाती है सरकार, दिलाता है न्याय,
किताब बिना समाज अधूरा, फैलाते अशांति और अन्याय ।
धन्य है किताब जो बनाया महामानव,
वाल्मीकि, तुलसी, कबीर और जयदेव ।
दाता हो तुम ज्ञान की, तुम हो महान,
तुमसे आलोकित होती है ये दुनिया, तुमको है मेरा प्रणाम ।

❐❐❐

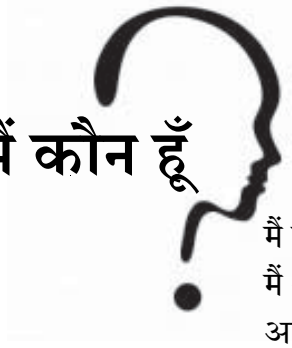

मैं कौन हूँ

देवयानी बिस्वाल
सुपुत्री-कमल कृष्ण बिस्वाल, ले.प.

मैं कौन हूँ... मुझे पहचानों,
मैं आता हूँ हर किसी के पास ।
आज नहीं तो कल, कभी न कभी,
खटकटाते हुए द्वार ॥
जिसने पहचाना मुझे समय पर,
मेरा फायदा उठाकर आगे बढ़ा ।
बनायी अपनी पहचान,
सफलता का शीर्ष चूमा ॥
उसने कोशिश तो की,
कल्पना और योजना बनायी।
मगर वास्तविकता से दूर भागा,
प्रतीक्षा करके मैं लौट गया ॥
वह क्या पहचानेगा,
आलसी का जीवन है जिसका ।
जिंदगी जिसका बोझ है,
वह दुनिया क्या बनाएगा ॥
मैं हूँ अवसर ... अवसर,
कभी आता हूँ जिंदगी के पहले पहर ।
तो कभी मृत्यु के आखिर क्षण पर,
कहता हूँ मुझे पहचानों ... मैं हूँ अवसर ॥
आज चिंताग्रस्त है मानव, चिंता छोड़कर,
हिम्मत से काम लो... अवसर का फायदा उठाओ ।
मैं हूँ ना ... छोटी सी जिंदगी, उसे सफल,
आनंद और साकार बनाओ ।

❐❐❐

तकदीर की टीस

बिघ्नेश कुमार मिश्र
ले.प.

देखिए वतन की तकदीर कब बदलती है,
धर्माधता की आँखें कब खुलती है,
मुश्किल बरपा है रागिनी में
अबला की लाज आज लुटती है ।
ढूढता रहा जो शख्स अपनी पहचान लुटेरों की जमात में,
उसे अपनी आन कब मिलती है ।
देखिए वतन की तकदीर कब बदलती है ।
सबर बर्बर दिख रहा हो आदमी जर्जर मिट रहा हो,
भरोसे की मुस्कान कब मिलती है ।
छोटे-छोटे गढ्ढों से बड़ा सुराख बन जाता है,
पड़े हुए उनमें लोगों को मुकाम कब मिलती है ।
देखिए वतन की तकदीर कब बदलती है,
लंगड़ों की दुनिया में रफ्तार कब मिलती है,
झुकी हुई है कमर जिनकी उनको अकड़ कब मिलती है,
देखिए वतन की तकदीर कब बदलती है ।
बिगड़ी हुई हो अक्ल जिनकी उनको कल कब मिलती है,
झल्लाते-चिल्लाते शोर बाजार में किसी की तुती बोलती है
गूंगों को आवाज कब मिलती है ।
देखिए वतन की तकदीर कब बदलती है,
संवारने वाले हों बिगडने में तुले, उनकी होनी कब टलती है,
बची हुई दरिंदगी में जिंदगी की बंदगी कब होती है,
देखिए वतन की तकदीर कब बदलती है ।

❐❐❐

आविर्भाव

बिघ्नेश कुमार मिश्र
ले.प.

कश्ती कागज की बना ली हमने,
समंदर पार करने की ठानी हमने,
सोच बैठा हिम्मत बना ली हमने,
तरंगें हरेक कौम की बह रही थीं,
हाथों की बाजुएँ खे रही थीं,
नौके को साथी बना ली हमने,
कश्ती कागज की बना ली हमने ।

दूर उजाला, दूर किनारा अपनी मंजिल को पास,
बैठा ली हमने,
कश्ती कागज की बना ली हमने
जल रंग-तरंग बदल रही थी अपनी उमंग,
थाम ली हमने,
समंदर की निधियाँ देख चुका था,
इनकी खूबियाँ भुला दी हमने
कश्ती कागज की बना ली हमने ।

उत्तर दिशा के तारे ने राह दिखाई, .
प्रश्नों की रफ्तार बढ़ा ली हमने,
कश्ती कागज की बना ली हमने,
दम भर भरमाया माया ने अपनी आँखे,
चुरा ली हमने,
जद्दो-जहद कश्मकश ने नौके की उछाल बढ़ाई,
तभी अपने मन की उछाल थाम ली हमने ।

गरम-गर्मी ने तपिश तन की बढ़ायी
सूरज तपा और समंदर ने भी तपाया,
अपने मन की शीतलता बढ़ा ली हमने,
किनारा पास आ पहुँचा सूरज ने यह तपकर बताया,
इस तरह कश्ती कागज से समंदर हरा ली हमने
कश्ती कागज की बना ली हमने ।

❐❐❐

आज की हकीकत

अशोक कुमार
क.हि.अ

अर्चना शैतान की होने लगी है,
वंदना बलवान की होने लगी है,
चेतना है त्रस्त मुर्दो के शहर में,
भर्त्सना भगवान की होने लगी है ।

दुर्दशा से हर दिशा शमशान है,
आदमी अब खो रहा ईमान है,
कर्मशीलों को यहां कुचला जाता,
कामचोरों का यहां बड़ा सम्मान है ।

धर्म से ही धन कमाने लग गए,
त्याग से तंगी मिटाने लग गए,
स्वर्ण कलशों में सुरा भरकर के,
वे स्वयं सेवी कहाने लग गये ।

आचरण की अस्मिता अब दांव पर है,
वासना का वार अब हर गांव पर है,
शील संयम की धरोहर लुट गई,
पतन की पतवार अब हर नाव पर है ।

सत्य को नकारा नहीं जाता,
असत्य को स्वकारा नहीं जाता ।
सत्य परेशान हो सकता है,
पराजित नहीं ।
हमें इससे सीख लेकर,
सत्य को सदैव अपनाना चाहिए ।

❐❐❐

मन्नत

ए. राउत,
सुपुत्री, श्रीमती कमला नायक
वरि.ले.प.अ.

आकाश में से तारा देखा,
चमकीला और बड़ा अनोखा ।
उसे देखकर आई एक भावना,
मेरी हो एक बेटी की कामना ।
सब करते हैं बेटे की चाह,
बेटी के लिए भरता हैं आह ।
माँ, बहन पत्नी, बहू और सास,
बेटी के रूप में सबकी हुई परवरिश ।
गाँव से लेकर शहर तक,
संकट में है नारी का हक ।
सुरक्षित नहीं नारी का जीवन,
हो रहा है दहेज उत्पीड़न ।
पग पग पर लगता है डर,
हो सकती है बलात्कार की शिकार
कन्या भ्रूण की हत्या की जाती,
जन्म से पहले मृत्यु आ जाती ।
नारी की देखी यही हालत,
फिर भी बेटी के लिए रखी मन्नत ।

ईश्वर ने सुनी मेरी बात,
पूरी की मेरी मन्नत ।
नन्हीं सी बच्ची गोद में आई,
पति के मन से खुशी गायब हो गई ।
घरवाले और आस-पड़ोस,
बेटी पर थे सभी निराश ।
फिर भी मैं न हिम्मत हारी,
बेटी पर रही आस हमारी ।
पढ़ लिख कर जब हुई बड़ी,
खेल कूंद में भी आगे बढ़ी ।
नृत्य-गीत में नाम कमाया,
देखकर उसके ये कमाल,
सबकी सोच गई बदल ।
जो पहले बेटी पर थे नाराज,
गा रहे हैं वे प्रशंसा आज ।
बेटी ने हमारा बढ़ाया सम्मान,
वह है हमारे गर्व की पहचान ।
बेटी और बेटे में न कोई अन्तर,
परवरिश पर करता निर्भर ।

❐❐❐

धरती रानी

अखिल जेना
व.ले.प

हमारी धरती बड़ी सुन्दर,
लगती जैसे फूलों का नगर ।
पर्वत, समंदर, नदी बहती,
फूल, फल और सुन्दर प्रकृति ।
सिख, ईसाई मुस्लिम, गुजराती,
साथ-साथ सभी संस्कृति मिलती ।
गगन के नीचे खेत और धरती,
हरियाली हर मन बहलाती ।

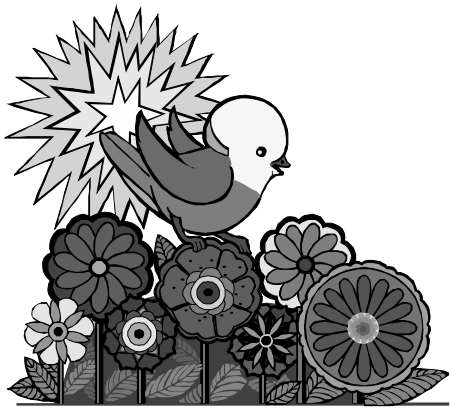

गरमी के बाद बारिश आती,
किसान के लिए खुशी ला देती ।
नील गगन में काला बादल,
मयूर के पैर में लगा पायल ।
हरी घास और कोमल पत्ते,
पशु जहां पर खुशी से चरते ।
धरती जैसे मां के समान,
हम करेंगे उसका सम्मान ।

❐❐❐

जीवन

अखिल जेना
व.ले.प.

जीवन एक अनजान सपना,
जीवन एक रहस्यमय कल्पना ।
जीवन एक उल्लास की धारा,
जीवन एक दृश्यहीन अंधेरा ।
जीवन एक अनन्त, सरस, सुन्दर,
जीवन एक अविराम झरणा,
जीवन एक सुख और यन्त्रणा ।
जीवन एक मधुर कविता शेषहीन,
जीवन एक ईश्वर का वरदान ।
जीवन एक कोरे कागज का पन्ना,
जीवन है सृष्ठा की एक रचना ।

❐❐❐

भाषाओं की रानी

जितेन्द्र कुमार
ले.प.

भाषाओं की रानी हिन्दी,
देश धर्म की शान है ।
संस्कृत की बेटी है ये,
होंठों की मुस्कान है ।
हिन्दी में भाषाओं की गंगा,
हिन्दी देश की मान है ।
राष्ट्र एकता की कुंजी से,
जन-गण-मन की जान है ।
हिन्दी है अस्मिता हमारी,
हिन्दी ही पहचान है ।
हिन्दी का सम्मान हमारे,
राष्ट्र का सम्मान है ।

❐❐❐

समय

रत्नाकर बेहेरा
व.ले.प.

समय सदा एक राह में चलता,
नहीं किसी के लिए यह रुकता।
चलते-चलते कभी नहीं थकता,
हर वक्त वस चलता रहता ।।

सुबह-शाम, दिन-रात यह चलता,
जग को अपने संग ले चलता ।
समय सदा एक राह में चलता,
नहीं यह किसी के लिए रुकता ॥

समय के संग जो चलते हैं,
बुद्धिमान तो वे कहलाते हैं।
जीवन में हमेशा आगे रहते हैं,
खुशी भरा सौभाग्य वे पाते हैं ॥

रूकने वाले बहुत पछताते,
हर बार वह पीछे रह जाते ।
समय है जिसको हमेशा प्यारा,
उसे ही जाने यह जग सारा ॥

❐❐❐

बारिश

श्री नृसिंह चरण राउत
स.ले.प.अ.

रिमझिम बारिश में भीगना अच्छा लगता है,
जैसे भूखे आदमी को खाना अच्छा लगता है।
ग्रीष्म के बाद जब पहली बारिश आती है,
मानो पेड़ पौधों में नई जिन्दगी भर जाती है ।

काले-काले बादल आकाश में मंडराते हैं,
उन्हें देखकर मोर खुशी से नाच उठते हैं।
धरती पर छा जाती है हर जगह हरियाली,
किसानों के लिए लाते है ये दिन खुशहाली।

बगीचे में खिलते है कई तरह के फूल,
जिन्हें देख कर खुशी से भर जाता है दिल।
नवदम्पतियों के लिए यह बारिश का मौसम,
न जाने कितना रोमांचक और कितना आराम।
लेकिन जब उनमें से एक रहता है दूर,
बारिश का आनन्द हो जाता है चकनाचूर ।

❐❐❐

लौटा दो मेरा बचपन

दीपु कुमार
लेप.

कोई मुझे लौटा दे मेरे बचपन की जिन्दगी,
वो मां की लोरी, दादी की परियों की कहानी,
गुड्डे-गुड़ियों का खेल और मेले का झूला
वो स्कूल न जाने के बहाने बनाना,
कभी पेट दर्द तो कभी स्कूल बंद का बहाना,
वो दोस्तों के साथ मौज मस्ती के दिन,
तितलियों को पकड़ना और लुका-छिपी का खेल,
कोई लौटा दे मेरे बचपन की जिन्दगी,
वो गर्मी की छुट्टी, बारिश का पानी,
मस्त थी वो बचपन की जिन्दगी,
वो चिन्ता मुक्त जिन्दगी वो मनमौजी राहें,
न कुछ खोने का डर था, न ही कुछ पाने का,
कहां गया वो बचपन, कहां गए वो दिन,
भूले नहीं भूलती वो खूबसूरत जिन्दगी,
कोई लौटा दे मेरे बचपन की जिन्दगी ।

❐❐❐

भारत निर्माण

सुभाष कुमार
लेप.

छोड़ो पुरानी बातों कों,
कोई नई बात करो यारों ।
देर हुई तो कोई बात नहीं,
एक नई शुरुआत करो यारों ।।
कुछ करो देश और समाज के लिए,
अपनी बातों को छोड़ो यारों ।
करो निर्माण एक नये भारत का,
नींव में एक-एक ईट तो भरो ॥
सोचो मत, समय बीत रहा है,
कुछ कर के दिखाओ यारों ।
भ्रष्टाचार बड़ी दीमक है,
इससे निजात दिलाओ यारों ॥

अशिक्षित अब भी है देश अपना,
घर-घर शिक्षा का दिया जलाओ यारों ।
बंटा हुआ है समाज आज भी,
जाति और धर्म को रास्ते से हटाओ यारों ॥
हो रही है हत्या लड़कियों की कोख में,
एक नई जागृति लाओ यारों ।
मर रहे है लोग भूख से तड़पकर,
इस भुखमरी से बचाओं यारों ॥
छोड़ो अब अपनी चिंता को,
एक नया भारत बनाओ यारों ।
छोड़ो पुरानी बातों को,
कोई नई बात करो यारों ॥

मेरी धड़कन

शिव प्रसाद चौबे
लेप.

कभी हमारे दिल मे उतर के तो देखो,
क्या है, हाल हमारा, समझ के तो देखो,
मत हो उत्साहित, इन शान्त लहरों को देखकर,
कभी इनके तूफानों को तो देखो ।

सम्भल जाएगी ये जिन्दगी,
कभी अपने आपको समझ के तो देखो,
या फिर इन तूफानों को समझा के तो देखो ।

एक अलख है हमारे दिल में, हम बताये भी तो कैसे,
मैं उस चमन का फूल हूँ, जिससे होती है हर महफिल गुलजार,
फिर भी मैं उस महफिल में मशरूफ हूँ, मैं बताऊं भी तो कैसे ।

हर एक दर्द की तस्वीर, मैं दिखांऊ भी तो कैसे,
अपना हाल-ए-दिल बताऊं भी तो कैसे,
बताऊं भी तो कैसे, बताऊं भी तो कैसे ।

❐❐❐

बेरोजगारी

अखिलेश कुमारी
पत्नी अशोक कुमार, क.हि.अ.

बेरोजगारी का आलम तो देखिए जनाब, हम इसे पाने हेतु कितना तड़प रहे हैं,
कल तो बस लिखते थे निबंध इस पर, आज खुद ही इस दौर से गुजर रहे हैं ।

जुल्म तो देखिए बेरोजगारी का, हम कैसे कैसे ताने सह रहे है,
कब तक खायेंगे बाप की कमाई, अब तो पड़ोसी भी हमसे कह रहे है ।

सपनों के जो बाधें थे पुल, वो भी ताश के पत्तो की तरह ढह रहे है,
ऊँचाइयों को छूने के थे जो अरमान, वो भी आंसुओं में बह रहे है,

मत पूछिए कोशिशों में क्या दांव-पेंच नही भिड़ा रहे है,
फिर भी ये डिग्री और प्रमाण पत्र हमको बेरोजगार कह कर चिढ़ा रहे है ।

बेरोजगारी की इस महाबीमारी में, सभी तो रिश्ते तोड़ रहे है,
जिन्हे कहा करते थे हम अपना, वो भी हमसे मुंह मोड़ रहे है ।

जो जिन्दगी लगा करती थी हसीं, उसी जिन्दगी से डर रहे है,
ये तो हम जानते हैं बेरोजगारी में, जिन्दगी जी रहे है या मर रहे है ।

❐❐❐

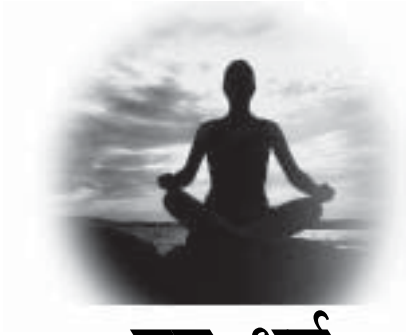

युग-धर्म

प्रशान्त कुमार पण्डा
व.ले.प.अ.

धर्म एक संस्कृत शब्द है जिसको अंग्रेजी में रिलीजन (Religion) कहा जाता है । लेकिन यह शब्द ठीक नहीं है, क्योंकि रिलीजन को कहा जाता है एक तरह का विश्वास । लेकिन विश्वास परिवर्तन हो सकता है । ऐसे प्रायः हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति अपना धर्म छोड़कर दूसरे धर्म में विश्वास करने लगता है । लेकिन ये धर्म ही है जिसका कोई परिवर्तन नहीं होता । ''धारयति इति धर्मः'' जैसे शंकर की मिठास में परिवर्तन नहीं हो सकता, उसी प्रकार जीव या मनुष्य का धर्म परिवर्तन नहीं हो सकता । यही धर्म की प्रकृति संज्ञा है । धर्म को जानना क्या जरुरी है ? इस प्रश्न का उत्तर एक श्लोक में दिया गया है -

आहार निद्रा भय मैथुनं च,
सामान्य एतद् पशुभि नराणाम् ।
धर्म हिं तेसां अधिक विशेषो,
धर्मेण हिना पशुभि समाना ॥

अर्थात् शरीर की आवश्यकता के अनुसार आहार, निद्रा, निरापदा, सुरक्षा और वंश विस्तार के हिसाब से पशु और मनुष्यों मे कोई भेद नहीं है । यह सब कार्य पशु भी करते हैं और मनुष्य भी । लेकिन मनुष्य की विशेषता क्या है ? विशेषता है धर्म, इसलिए वेदों में बताया गया है :-

अथातो ब्रह्मा जिज्ञासा ।

क्योंकि हम मनुष्य जन्म पाये हैं, इसका मतलब हम पशु से उन्नत जन्म पाये हैं, पद्मा पुराण में कहा गया है - जलजीव नौ लाख प्रकार के हैं, स्थावर बीस लाख प्रकार के कृमि ग्यारह लाख, पक्षी

दस लाख और मानव चार लाख प्रकार के हैं, अर्थात् अस्सी लाख प्रकार जीवन पार होने के बाद हम मानव जन्म प्राप्त करते हैं, इसलिए मानव जन्म का उद्देश्य है ''ब्रह्मा जिज्ञासा'' । अन्य अर्थ में हम कह सकते हैं कि मानव जन्म पाकर जो ब्रह्मा के बारे में जिज्ञासा नहीं करता है तो वह पशु से बेहतर नहीं है ।

तो ये जिज्ञासा क्या है ?

भगवान भगवत गीता में कहते हैं -

जन्म मृत्यु जरा ब्याधि दीषानु दुर्रानम् । (भ.गी.-१३/९)

क्यों हमे दुःख मिलता है ? जैसे सरकार के नियम भंग करने से हमें दण्ड मिलता है, उसी प्रकार भगवान के नियम भंग करने से हमें ये दण्ड मिलता है, तो भगवान कहते हैं -

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयम शाक्ष्वतम्
नाणनुवन्ति महात्मानः संसिद्धिः परमां गताः । (भ.गी. ८-१५)

अर्थात् मुझे प्राप्त करके महापुरूष कभी भी दुखों से पूर्ण इस अनित्य जगत में नहीं लौटेंगे, क्योंकि उन्हें परम सिद्धि प्राप्त होती है, यही है सच्चा धर्म ।

तो भगवान को प्राप्त करने का विभिन्न युगों में विभिन्न उपाय हैं - सत्य युग में ध्यान, त्रेता युग में यज्ञ, द्वापर युग में मूर्ति पूजा और इस कलियुग में भगवान का नाम, जो कोई चाहे वह किसी भी धर्म से क्यों न हो उसे भगवान का नाम लेना चाहिए । वेदों में भगवान का नाम इस तरह बताया गया है -

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे,
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।

इस नाम के कीर्तन करने से भगवान अनुभव होता है, और हमारी जो भौतिक जगत की मूल समस्याएं हैं यथा - जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि आदि, हम इनका समाधान कर सकते हैं ।

हरे कृष्ण

❐❐❐

प्रारम्भ

श्रीमती कमला नायक
वरि.ले.प.अ.

जेल के झरोखे से दोनों दुर्बल करूण्य भरा मगर अग्निशिख बरसने वाले अपलक नेत्र बाहर के जनसमावेश को देख रहे थे। वह दिन था 15 अगस्त, देश-वासियों के लिए एक आनंद उल्लास का दिन, महात्मा गांधी तथा वंदेमातरम की उज्जस्विनी जय-जयकर से गगन पवन प्रकम्पित हो रहा था। लगता था जैसे एक सुखी की लहर जनमानस को छू रही है। लेकिन बंद कोठरी में बैठा हुआ 22 साल का आदिवासी युवक किसान ये सब देख सुनकर भी निराश और उदास था। उसे लगता था कि स्वाधीनता की मिठास सिर्फ धनिक, उच्चपदस्थ लोगों एवं उच्च जाति के लिए ही है । उस जैसे गरीब, निम्न जाति तथा गिरिजन के लिए कोई कायदा ही नहीं है। सामान्य जीवन बिताने के लिए उनका कोई हक नहीं है। वह अगर सच बोले भी तो उनकी बात सच नहीं मानी जाएगी । आंखों के सामने उनके प्रति हो रहे अत्याचार को देखते हुए भी उस समस्या का कोई समाधान नहीं हो रहा था । इसलिए देश स्वाधीन होने से भी, आजादी मिलने से भी, रहन सहन में बदलाव आने पर भी उन्हें कुछ नहीं मिला। सरकार की ओर से उनके लिए जो कुछ भी सुविधा दी जी रही थी, उन्हें दलाल उपभोग करते हैं। देश के गरीब दुखी रात्रि के गहरे अन्धकार में ये सब ढूंढ रहे थे। उनके सुख का सुबह बहुत दूर हो गया था। जेल के बाहर जोर-जोर से शोर की आवाज आती थी, शायद स्वाधीनता दिवस के अवसर पर सफेद टोपी पहन कर नेताओं ने बढ़-चढ़ कर नारेबाजी की थी। लेकिन किसान पर उनकी नारेबाजी, उनके सफेद कपड़े का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। दिन ढलते ही उनकी नारेबाजी का रंग बदल जाता था। नेताओं की वही मिथ्या मन गढ़ंत नारेबाजी सुनते सुनते किसान का शैशव, किशोर और यौवन का कुछ हिस्सा बीत गया। किसान एक गरीब हरिजन परिवार का लड़का था । जब वह छोटा था, मां के साथ खेतों में काम करता था। बचपन में उसे जितनी स्वाधीनता प्राप्त हुई थी, बड़े होने पर उसकी पराधीनता बहुत बढ़ गयी थी। जब वह अपना हक महसूस करने लगा, तो उसे लगता था कि उसकी स्वतंत्रता पर पाबंदी लगी है, उसका चलना, उठना, बैठना, काम करना, सब दूसरों की मर्जी पर तय होने लगा था, गरीब घर में पैदा होने के कारण उसे स्कूल में अधिक पढ़ने

का सौभाग्य नही मिला था । जंगल से लकड़ी बटोरना, मछली पकड़ना उसका मुख्य काम था । लेकिन एक दिन गांव के मुखिया ने अपने घर का काम-काज कराने के लिए जबरन उसके मां बाप से उसके बेटे को ले गया, क्योंकि उसके पिता ने उससे कुछ कर्ज लिया था और लौटा नहीं पाया था, पितृ ऋण चुकाने के लिए उस पर काम का बोझ तथा निर्दय व्यवहार का सामना करना पड़ा। रोते-रोते एक दिन वह वहां से भाग निकला और अपने घर पहुंच गया ।

उस दिन गांव में सरकार की ओर से सर्वशिक्षा योजना की प्रयोगीकरण चल रहा था। स्कूल के शिक्षक ने किसान के माता पिता को समझा बुझाकर उसे स्कूल में दाखिला करा दिया, रहने और खाने पीने का सब बन्दोबस्त था। सरकार की तरफ से किताब और पाठन सामग्री भी दी जाती थी । किसान मन में सोच रहा था कि दूसरे साथियों की तरह वह भी पढ़ाई करेगा, नौकरी करेगा, अपना हक हासिल करेगा, अपने परिवार की तकदीर बनाएगा। लेकिन हाय ! उसकी तकदीर का दोष था या गरीबी का दोष। किसान वहा भी टिक नहीं सका क्योंकि स्कूल में पढाई का तो नामोंनिशान नही था, उपर से स्कूल के शिक्षक, बच्चों से अपने घर का काम काज कराते थे, और यौन उत्पीड़न करते थे। किसान भी इस दुर्भाग्य का शिकार बन गया, उससे यह सहा नही गया। अपने टूटे हुए सपनों को साकार करने के लिए किसान स्कूल से अलविदा ले लिया और फिर एक साहुकार के घर में काम करने लगा, साहूकार का लड़का उसका सहपाठी था । इसलिए उस पर दया दिखा कर कभी कभार रूपया, चावल आदि की सहायता करता था। इस बीच किसान एक आदिवासी संगठन की बातों में आ गया, जिसका लक्ष्य था ''अपना हक मांगना''। अनपढ़ और गरीब समझकर गांव के मुखिया तथा दलालों ने उसकी जमीन हड़प ली थी। बहू बेटियों का बलात्कार करते थे। उनका अभियोग या दुःख भरी कहानी को सुनने के लिए और उनके प्रतिकार करने के लिए कोई सहायता नही मिलती थी, न्याय पाने के लिए उन्हे सिर्फ इन्तजार ही करना पड़ता था। ऐसी स्थिति में किसान की बहन को एक दलाल ने उठा लिया। परिवार के लोग देखने के सिवाय और कुछ न कर सके ।

परिवार के दुःख दर्द तथा उसकी समस्या पर सरकार की उदासीनता को महसूस करके किसान हक मांगने वाला संगठन का सदस्य बन गया । सरकार गरीबों के लिए योजना बनाती थी, लेकिन फायदा कुछ उच्च वर्ग को मिलता था। इसलिए चुप बैठने से काम नहीं चलेगा। गरीब और गरीब होते जा रहे थे, अमीर ज्यादा अमीर बनते जा रहे थे। क्या यही था महात्मा गांधी के द्वारा लाया गया स्वाधीनता का लक्ष्य ? शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास आदि मूल आवश्यकताओं से वंचित होना और प्रतिवाद करने से निर्दोष होने पर भी दंड़ भुगतना, स्वाधीनता का क्या मूल्य था ? कितने सारे

राजनैतिक दलालों के कारण आज सुख के बजाय दुःख की छाया देखनी पड़ी। ये सब देख कर किसान का मन विद्रोही हो उठा और उक्त संगठन के सदस्य बनकर अपने परिवार, अपने समाज और अपने भाइयों के लिए लड़ना शुरू कर दिया, लेकिन कौन जानता था। कि अपना हक मांगना भी गुनाह है। जिसकी वजह से वह आज दंड भुगत रहा है। उस समय आंदोलन हड़ताल, धरना आदि में किसान का दिन बीतता था। एक आन्दोलन के दौरान एक पुलिस अधिकारी की मौत हो गयी थी। सिर्फ पुलिस नही इसमें बहुत सारे आम आदमी भी हताहत हुए थे। लेकिन पुलिस की मौत के कारण संघ का मुखिया खुद निकल गया और किसान को दोषी ठहरा कर जेल भेज दिया गया।

उस दिन से दो साल हो गये, किसान जेल की कोठरी में सड रहा था। दानव सिंह नाम का दलाल ही उस संघ का मुखिया था। गरीब, शोषित अनपढ़, अनजान, आदिवासियों को फसाकर वह सरकार विरोधी, संघर्ष करता था और विपत्ति आने पर उन निर्दोष लोगों को कानूनी कार्रवाई के लिए भेज देता था जो बाद में जेल जाते थे। इन दो सालों में किसान के खाने-पीने, सोने-जागने का कोई ठिकाना नहीं था। एक ही चिन्ता उसे सता रही थी, कैसे दलाल दानव सिंह के कारनामों का परदा हटाकर उसे सबक सिखाना। ऐसे ही बिना दोष से वह अंधे कानून का शिकार हो कर दंड़ भुगत रहा था। किसान अपने शैशव, यौवन में शोषण के शिकार बनते बनते आज मृत्यु के द्वार तक पहुंच गया था, अब किसी बात की परवाह नहीं। उसके तथा उसके भाईयों की सुख शान्ति को छीनने वाला दलाल दानव को सजा देने से ही उसकी आत्मा को शान्ति मिलेगी। कानून तो यह करेगा नही, अगर करेगा भी तो, तब तक शायद किसान जिन्दा नहीं रहेगा। अपनी जिन्दगी में सुख की सुबह आये या न आये, दानव सिंह के सुख को खत्म करना पड़ेगा।

स्वाधीनता दिवस के अवसर पर सभी कैदी जश्न मना रहे थे, लेकिन किसान अपने अतीत का मन्थन करके आँसू बहा रहा था। उसको मां बाप, बहन कहां क्या कर रहे हैं, उसे कुछ पता नही था। खुद के भविष्य का सूरज डूबने वाला था। गरीब तथा नीच जाति के होने का फल, इतनी बड़ी सजा! क्या भगवान, सरकार सब उससे विमुख है ? क्या उन लोगों के जीवन में सुख की सुबह नहीं आयेगी ? सोचते-सोचते किसान कब नींद में सो गया। नींद में सपना देखा कि दलाल दानव सिंह ने किसी की हत्या कर डाली है और सजा के रूप में उसे फांसी पर चढाया जाएगा। उसके मुख मंडल में हजारों अपराधों की छाप लगी थी। उसे देखकर किसान हंसते-हंसते जब गिर पड़ा तो उसकी नींद टूट गयी। उसकी हंसी बंद हो गयी और वह समझ गया कि यह केवल सपना ही था। किसान की जिंदगी में सचमुच सुबह आ गयी थी। किसान की बंद कोठरी को किसी के खोलने की आवाज आई

तो किसान ने देखा कि जेलर साहब द्वार पर खड़े होकर उसे बधाई दे रहे थे, और कह रहे थे कि वकील साहब ने तुम्हारा केस जीत लिया है, आज तुमको रिहा किया गया है, और तुम्हारे जगह दानव सिंह दोषी पाया गया है, क्योंकि पुलिस अधिकारी का हत्यारा तुम नहीं दानव सिंह ही था । उसे फांसी दी जाएगी। किसान ताज्जुब कर रहा था कि सपना कैसे सच हो गया। हां उसका सपना सच करने वाला और कोई नही बल्कि किसान का सहपाठी साहुकार का लड़का, वकील-मानव राय ही था। उसके घर में काम करते वक्त मानव किसान की समस्या अच्छी तरह समझा चुका था, इसलिए उसने किसान के लिए कोर्ट में लड़कर केस में जीत दिलाई । दुःख के घने अंधकार को चीरकर किसान की जिन्दगी में शायद सुख की सुबह आ गयी । एक दुःख दर्द भरा जीवन का अन्त होकर सुख शान्ति भरा जीवन का प्रारम्भ शायद किसान का प्रतीक्षा कर रहा था । किसान ने सोचा था शायद सरकार, कानून और भगवान सब अमीर और कुछ चुने हुए लोगों के लिए ही है, लेकिन आज उसकी गलतफहमी दूर हो गयी । उसे लगा कि भगवान के घर देर है अन्धेर नहीं ।

❐❐❐

समय की कीमत

कृष्ण कुमार
लेप

एक शहर में एक परिवार रहता था । पति-पत्नी और उनकी एक प्यारी सी बेटी। पति हर रोज की तरह अपने दफ्तर जाता और रात में घर लैटता । एक दिन वह देर रात से घर आया और जब दरवाजा खटखटाया तो उसकी 6 वर्षीय बेटी ने दरवाजा खोला, यह देख कर उसको आश्चर्य हुआ कि उसकी बेटी अभी तक सोई नहीं ।

जैसे बच्चों की आदत होती है कि घर आने पर अपने माता-पिता से वे लिपट जाते हैं और बातें करना शुरू कर देते है। उसी तरह उसकी बेटी ने भी किया । अन्दर घुसते ही बेटी ने पूछा - पापा ! पापा ! क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकती हूँ। पिता ने कहा - हां, बिल्कुल पूछो। बेटी ने कहा कि आपकी एक दिन की कमाई कितनी है ।

पिता को यह सवाल अच्छा नहीं लगा पर उसने उसको बता दिया और बेटी ने फिर पूछा कि पापा ! पापा ! एक घंटे में आपकी कितनी कमाई होती है। बस, यह सुन कर वह आग बबूला हो गया और अपनी बेटी को ड़ांट कर अपने कमरे में चला गया ।

थोड़ी देर के बाद जब उस का गुस्सा थोड़ा शांत हुआ तो उसे लगा कि उसने बिना वजह से डांटा है वह अपनी बेटी के पास गया । उसको अपनी गोद में बिठाया और कहा, ''बेटी मैं एक घंटे में 200 रूपये कमा लेता हूँ।'' तभी बेटी ने बड़ी मासूमियत से सिर झुकाते हुए कहा, ''अच्छा-पापा क्या आप मुझे 100 रूपये दे सकेंगे ?'' पिता ने कहा, ''क्यों नहीं'', ''पर तुम इसका क्या करोगी, तुम्हे क्या चाहिए, मुझे बता दो, कल मैं ले आऊंगा'' बेटी ने कहा, ''नहीं पापा ! मुझे कुछ नहीं चाहिए, बस आप मुझे 100 रूपये दे दीजिए।'' पर वो सोचने लगा कि क्या हो सकता है, क्यों चाहिए उसे रूपये, क्या करेगी 100 रूपये में।

तभी पिता ने पर्स से 100 रूपये निकाल कर अपनी बेटी को दे दिए। ''थैंक्यू, पापा'' बेटी ने खुशी से पैसे लेते हुए कहा और फिर वह उठ कर अपनी अलमारी की तरफ गई। वहां से उसने ढेर सारे सिक्के निकाले और धीरे-धीरे उन्हें गिनने लगी। यह देख कर उसे समझ नहीं आ रहा था कि हो

क्या रहा है। जब मेरी बेटी के पास इतने पैसे है तो वह और क्यों मांग रही थी ? पिता ने पूछ ही लिया, कि जब तुम्हारे पास पहले से ही पैसे थे तो तुमने मुझसे और पैसे क्यों मांगे ? बेटी ने कहा, 'क्योंकि मेरे पास पैसे कम थे, पर अब पूरे हो गए।' बेटी ने बहुत ही प्यार से अपने पिता से कहा, ''पापा अब मेरे पास 200 रूपये हैं, क्या मैं आपका एक घंटा खरीद सकती हूँ ? कृपया आप ये पैसे ले लीजिए और कल घर जल्दी आ जाइये । हम सभी एक साथ मिल कर खाना खाएंगे । यह सुन कर पिता की आंखों में आंसू आ गए और उसने अपनी बेटी को गले लगा लिया।

दोस्तों, इस तेज रफ्तार जिन्दगी में हम सभी इतने व्यस्त हो गए है कि अपने परिवार वालों को वक्त नहीं दे पाते। हम उन लोगों के लिए समय नहीं निकाल सकते जो हमारे जीवन में सबसे ज्यादा महत्व रखते हैं। दोस्तों, हमें यह ख्याल रखना होगा कि इस व्यस्त जिन्दगी में हम अपने परिवार वालों के लिए कुछ समय अवश्य निकालें।

❐❐❐

अधूरा अस्तित्व

श्रीमती प्रतिमा बेहेरा
व.ले.प

जिन्दगी की राह में चलते-चलते न जाने कितने मंजर गुजर गए, कुछ मंजरों ने खुशियाँ दी तो कुछ ने जिन्दगी को ही डगमगा दिया, लेकिन मन की गहराईयों में हिल्होरे लेते हुए आंसुओं को पोछेगा कौन ? इस अधूरेपन की घुटन से बाहर निकालेगा कौन ?

जब मैं छोटी थी, तो मुझे कामयाब लोगों को देखकर बहुत बुरा लगता था, सोचती थी कि मैं भी एक दिन पढ लिखकर बड़ी अफसर बनूंगी, उन लोगों की तरह मैं भी कामयाबी की बुलन्दियों को छू लूंगी । उँची शिक्षा और पद पाने के बाद मैं भी एक अच्छे और संभ्रांत परिवार के लड़के के साथ शादी करूँगी। लेकिन मेरे सपने अधूरे ही रह गये। अपना एक सुन्दर सा आशियाँ बनाने का अरमान कभी पूरा न हो सका। अपने मन की गांठ मैं किसके सामने खोलूं ? बिखरे हुए सपनों का बोझ, मानसिक असन्तुलन मुझे अन्दर ही अन्दर खाए जा रही है। एक लड़की जब शादी करके अपने पति का हाथ थामती है तो उसकी इज्जत, उसका रूतबा इस जमाने में कितना ऊँचा हो जाता है। किन्तु जब एक लड़की कुंवारी रह जाती है तो वो कितनी ही कामयाब क्यों न हो, समाज उसका रहन सहन, उसके चरित्र पर लांछन लगाने में पीछे नहीं हटता।

आज मैं एक बैंक अधिकारी हूँ। अच्छे गुण और सुन्दरता की मुझमें कोई कमी नहीं है। लेकिन फिर भी आज तक मेरे हाथ पीले न हो सके । मुझसे शादी करने के लिए कोई नहीं राजी होता है, क्योंकि मैं एक अनाथ हुँ । मेरे पास मेरा अपना परिवार या स्टेटस नहीं है। आज के जमाने में करीबन हर कोई शिक्षित या पढ़ा लिखा है । परन्तु आज तक समाज को गलत सोच और गन्दी विचारधाराओं ने जकड़ रखा है। इसका कारण अनैतिकता और अध्यात्मिक आधारशिलाओं की कमीं है। अगर विद्यालय के प्रथम सोपान से लेकर पढ़ाई के अंत होने तक तथा परिवारों में भी जीवन जीने की कला और आध्यात्मिक शिक्षा दी जाए, तो निश्चय ही समाज में नैतिक बोध का उदय हो सकेगा, समाज उच्च कोटि की शिक्षा, दीक्षा, मूल्यों और श्रंखलित नियमों में आबद्ध हो जाएगा।

पता नहीं वो कौन सा मनहूस दिन था जब मेरी माँ ने मुझे अस्पताल में छोड़ दिया था, फिर, मुझे आदृता चिल्ड्रेन होम ने अडाप्ट किया, मेरी तरह सौ से भी ज्यादा लड़कियां इस आश्रम की गोद में पल-बढ़ रही हैं। वैसे तो सब कुछ ठीक ही रहता है। लेकिन जब कोई परेशानी दस्तक देती है तो मुझे अपने माँ के ऊपर बहुत गुस्सा आता है, कभी-कभी सोचती हूँ कि अगर जीवन के किसी भी डगर पर वो मिल जाये तो मैं उनसे जरूर पूंछूगी कि उन्होंने क्यों मुझे अनाथ बना दिया ? क्या मैं उनके ऊपर इतनी बड़ी बोझ थी ? अगर मैं उन्हें पसंद ही नहीं थी तो उन्होंने मुझे पैदा ही क्यों किया ? ऐसे हजारों सवाल मेरे मन और अंतरात्मा को कचोट देती थी। धीरे-धीरे जब मैं इस संसार के कायदे-कानून समझने लगी, तो मुझे मेरी माँ के दर्द का एहसास हुआ। माँ तो भगवान का रूप होती है, नौ महीने अपने कोख में खुद के खून से सींच-सींच कर अपने बच्चे को बड़ा करती है, फिर एक माँ अपने बच्चे से अलग कैसे रह सकती है ? अवश्य ही परिस्थितियों की चपेट में आकर उन्होंने इतना बड़ा कदम उठाया होगा, उनकी कोई न कोई मजबूरी रही होगी। आज मैं तो इस आश्रम में अच्छे से रह रही हूँ, लेकिन मेरी माँ को न जाने किन हालातों का सामना करना पड़ा होगा। वो भी मुझे मन ही मन खोज रही होगी, मेरे बारे में सोच रही होगी, मेरी याद में वो भी मेरी तरह रोती-बिलखती होगी।

आदृता चिल्ड्रेन होम मेरे जैसे बहुत सारी अनाथ लडकियों के लिए एक आश्रय है। उसी की वजह से हमें अपना सिर छिपाने के लिए छत नसीब हो सकी है। कुछ धार्मिक प्रवृति और नेक लोगों के अनुदान से चलता है हमारा आदृता आश्रम। सेहत से भरपूर खाना-पीना, कपडे-लत्ते, पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ हमें अच्छे संस्कार, सदगुण, शास्त्रीय नृत्य-संगीत, त्रिकला, सिलाई-कढ़ाई और समाज में स्वावलंबी बनने की शिक्षा और दीक्षा हमें मिलती है। दुनिया में अपना एक अस्तित्व बनाने के लिए हम लोग दिन-रात मेहनत करते है, फिर भी लोग हमें अपनाने से क्यों कतराते हैं ? कॉलेज और ओड़िशा एसोसिएशन की तरफ से देश-विदेश के कितने सांस्कृतिक नृत्य और संगीत के कार्यक्रम होते हैं उसमें हम और हमारे अनाथश्रम के अन्य साथी भी भाग लेते हैं, कितनी वाह-वाही मिलती है, पुरस्कार भी मिलते हैं, परन्तु सब लोग आखिरकार एक ही बात बोलते हैं, ''अरे ये लोग तो अनाथ हैं, जो भी पहना है, खाना-पीना सब कुछ तो इन लोगों को दया और दान के कारण ही मिलते हैं, भला इनका अपना अस्तित्व क्या है, कौन इनका इस दुनियां में !'' जहां भी जाओ बस अनाथ, अनाथ और अनाथ, येह शब्द जैसे हमारे जीवन ही नहीं हमारे आत्मा का भी एक अटूट हिस्सा बन चुका है । मै सोचती थी कि इस दुनिया में जहाँ इतने लोग रहते हैं, वहाँ कोई अकेला कैसे हो सकता है ?

धीरे-धीरे दिन, महीने, साल बीतते गए । मेरी नवीं कक्षा की परीक्षाएं खत्म ही हुई थी कि हमारे आश्रम की सबसे बड़ी दीदी, मीरा दीदी के लिए एक बहुत अच्छा रिश्ता आया । हमारे होने वाले जीजा जी एक इंजीनियर थे । हमारे फाउंडर रिश्ते की बात सुनकर बहुत खुश तो हुए लेकिन उन्होंने मीरा दीदी के होने वाले ससुर से सोचने के लिए कुछ समय मांगा । उन्होंने कहा - अब शादी अगर करनी है तो कुछ लेन-देन का इंतजाम तो करना ही पड़ेगा, इसलिए कुछ समय चाहिए । लेकिन मीरा दीदी के सास-ससुर और होने वाले पति बहुत ही अच्छे थे । उन्होंने फाउंडर की बात सुनकर तुरंत ही जवाब दिया - हमें मीरा के अलावा और कुछ नहीं चाहिए, उल्टा हमें आपको देना चाहिए क्योकि आप हमें मीरा के रूप में इतनी सुन्दर, संस्कारी, समझदार और गुणी लड़की भेंट स्वरूप दे रहे हैं । मिठाई के अनगिनत डिब्बे, सोने-जेवर, पैसे, ये कोई भी चीज हमें नहीं चाहिए । हम सुशिक्षित लोग हैं, हमारा मनोहर आज एक इंजीनियर भी बन चुका है, वह स्वाभिमानी भी है और स्वावलंभी भी । जब मीरा सब कुछ छोड़ कर अपना सब कुछ हम पर न्यौछावर कर सकती है, तो हमारा मनोहर और हम उसकी सुख सुविधा का ख्याल नहीं रख सकते ? हमें धन-दौलत, मिठाई, जेवर कुछ भी नहीं चाहिए, चिंता मत कीजिए, हमारे लिए मीरा हमारी बेटी से भी बढ़कर है । यह सुनते ही हमारे फाउंडर के साथ-साथ पूरे आश्रम में एक खुशी की लहर दौड़ गयी । एक हफ्ते के अन्दर ही हमारी मीरा दीदी की शादी मनोहर जीजू के साथ हो गयी ।

शादी के बाद जब दीदी आश्रम में आती थी तो बहुत खुश लगती थी, उसके चेहरे की एक अलग चमक थी, वो एक सुन्दर सी परी जैसे दिखने लगी थी । वो हमें जीजा जी और उनके परिवार के बारे में बताती थी कि किस तरह सब लोग उसका ख्याल रखते थे, उसे सर-आँखों पर बिठाते थे । यह सब सुनकर बहुत अच्छा लगता था, हमें बहुत प्रेरणा मिलती थी । दीदी आज एक सरकारी नौकरी कर रही है । शादी के समय दीदी +3 की कक्षा में थी । फिर जीजा जी और उनके परिवार वालों ने दीदी को आगे पढ़ाया-लिखाया और इस काबिल बनाया । मीरा दीदी हमेशा कहा करती थी कि ''तुम सब भी अच्छे बच्चें बनो, पढ़-लिख कर खूब तरक्की करो । तुम्हें भी तुम्हारे मनोहर जीजा जी जैसे अच्छे अच्छे लड़के अपने संग ब्याह कर ले जाएंगे । तुम भी रानियों की तरह रहोगी ।'' ये सब सुनकर हममें पढ़ाई-लिखाई, अपने आपको काबिल और कामयाब बनाने के प्रति ललक और भी बढ़ जाती थी ।

लेकिन सपने और हकीकत में बहुत फासला होता है । मीरा दीदी की शादी को पंद्रह साल हो गए । अभी उसके दो नन्हें-मुन्ने बच्चे भी स्कूल जाने लगे हैं । उसका परिवार भरा-पूरा हो गया ।

लेकिन हम सब लड़कियाँ अभी तक कुंवारी ही हैं । अब मैं एक बैंक ऑफिसर हूँ, काजल एक आईपीएस ऑफिसर है और हमारी बाकी सहेलियां भी अच्छी-अच्छी जगहों पर नौकरी कर रही हैं । आज हमारे पास सब कुछ है, लेकिन हमारे सुख-दुःख को बांटने वाला कोई हमसफर नहीं है । कभी-कभी हम सोचने लगते कि क्या मनोहर जीजा जी और उनके परिवार जैसे लोगो को भगवान ने बनाना बंद कर दिया ? जो कोई भी हमें पसंद करता है, बाद में हमें छोड़ देता है... क्योंकि हम लोग अनाथ हैं । सबका यही कहना है कि जिनके जन्म का कोई ठिकाना नहीं, वह क्या कभी किसी घर की बहू हो सकेंगी ? क्या उनमें अच्छे संस्कार होंगे ?

'सुरभि' तुम एक बहुत ही सुप्रसिद्ध पत्रिका हो, सभ्य और शिक्षित समाज तो तुम्हारे ही गर्भ में उपस्थित है । तुम्हारे इन पन्नों के माध्यम से कितनी ही अँधेरी रातें रोशनी से उजागर हो उठती हैं, कितने पढ़े-लिखे सरकारी कर्मचारी तुमसे प्रोत्साहित होते हैं । इसीलिए आज अपने बैंक के डेस्क पर बैठ कर मैने सोचा कि तुम्हारे ही पन्नों के माध्यम से सबको अपने तमाम अनाथों के अधूरे अस्तित्व की कहानी बताऊंगी । अगर हमसे कोई शादी नहीं करेगा और हमें कोई नहीं अपनाएगा तो हम इस संसार में अपना सर कहाँ छुपाएंगे और भी जो अनाथ बच्चे इस समाज में पनपते हैं उन्हें कौन पनाह देगा ? आईने के सामने जब खुद को देखती हूँ तो अपने आप से और अपने वजूद से ही डर लगता है । अगर मैं ये आश्रम छोड़ कर चली गई तो इस समाज की बुरी नजरों से कैसे बचूंगी ? समाज की कुरीति और कुकर्म मेरे मान-सम्मान और इज्जत को रौंद डालेंगे । मैं भी शायद अपनी माँ की तरह ही बन जाऊंगी ।

क्या परिवार और माता-पिता का नाम ही सब कुछ होता है ? क्या गुण, संस्कार, अपनापन... इन सबकी हमारे समाज में कोई जगह नहीं ? क्या हम अनाथ सिर्फ मनहूस ही होते हैं, बोझ होते हैं, हमे चाहने और समझने वाला कोई नहीं है ??? हम अनाथ हुए तो क्या हुआ, हम भी इंसान हैं । शरीर की लिप्साएं, मन के अनगिनत सपनें, आकांक्षाए, हममें भी हैं । हमें भी मान-सम्मान के साथ जीने का हक है । हमें भी इन्तजार होता है किसी ऐसे इन्सान की जो हमें अपने पनाहों में सुरक्षित रख सके, दुनियां में मान-सम्मान दे सके, हमारा हाथ थाम कर उम्र भर जो चल सके । ये सब तभी सम्भव हो सकता है जब सरकार, समाज और हर एक आदमी हमारे जैसे अनाथों के लिए कुछ अच्छा और सच्चा सोंचे ।

जिन दम्पतियों को बच्चे नहीं होते, वे लोग सिर्फ लड़कों को ही गोद लेते हैं । लेकिन हमारी जैसी अनाथ लड़कियों को कोई भी गोद नहीं लेता । सब लोग यही सोचते है कि अगर लड़की को

गोद लिया तो उसका ख्याल कौन रखेगा, उसकी रक्षा कौन करेगा, पढ़ाई लिखाई की जिम्मेदारी कौन उठाएगा ? और इतना सब करने के बाद भी उसकी शादी के लिए पैसे, जेवरात, दहेज कहाँ से आयेगा ? हमारे देश की सरकार ने निचले और पिछड़े वर्गों के लोगों के लिए कितनी सुविधाए प्रदान की है । जैसे कि गरीब के लिए राशन कार्ड, परिवार में अगर एक बच्चा हो तो उसके लिए ग्रीन कार्ड, विधवाओं के लिए विधवा भत्ता, निम्न जाति के लोगों के लिए आरक्षण, अगर कोई ऊँचे वर्ग का लड़का किसी निचले वर्ग की लड़की से शादी करता है तो उसे भी मोटी रकम मिलती है ।

अगर हम जैसे अनाथों के लिए भी सरकार कुछ ऐसी व्यवस्थाए करती तो समाज से बहुत सारी कुरीतियों का भी उन्मूलन हो सकता है । नारी पर घरेलु हिंसा, दहेज प्रथा, कन्याओं की हत्या, इन सब आवांछित सामाजिक अवस्थाओं पर भी रोक लग सकती है । सरकार, समाज और लोगों की सहायता से मुझ जैसी कितनी ही अनाथ लड़कियों की जिन्दगियां संवर जाएगी और साथ ही यह धरती जरूर स्वर्ग बन जाएगी । अब बस इन्तजार है एक अधूरे अस्तित्व के पूरा होने का, क्या समाज हम जैसे वर्ग के लोगों को भी अपना सकेगा ? क्या हमें और हमारे वेदनाओं को समझकर हमारा हाथ थामने के लिए कोई सामने आएगा ? क्या सच में पूरा हो सकेगा यह अधूरा अस्तित्व ???

❐❐❐

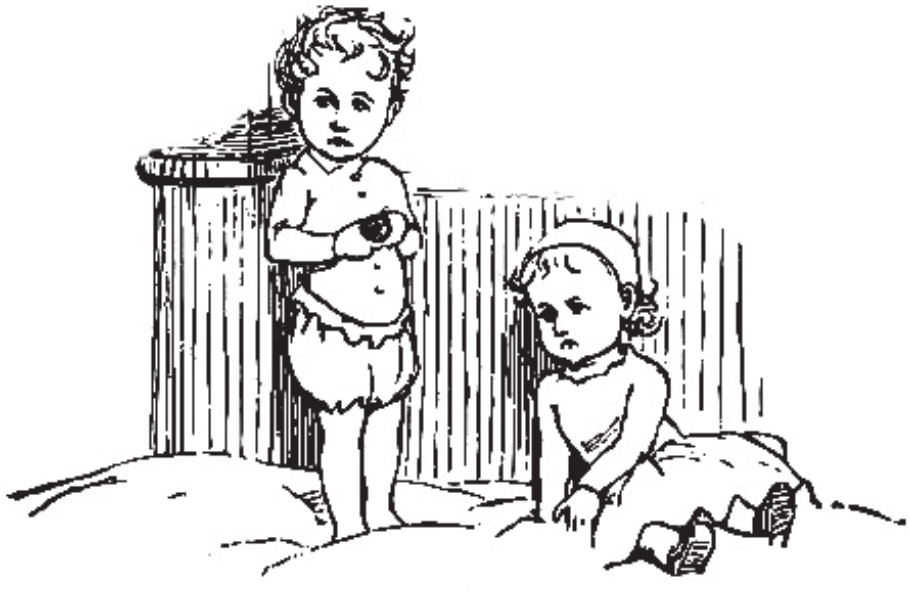

जीवन का उद्देश्य

दीपु कुमार
लेप

प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने जीवन का कुछ उद्देश्य होना चाहिए । उद्देश्य बिना जिन्दगी बेरंगी होती है । जिसका कोई उद्देश्य नहीं, वो व्यक्ति अपने जीवन को सफल नहीं बना सकता । उद्देश्य सिर्फ बनावटी नहीं बल्कि ऐसा होना चाहिए जिसे पूरा करने की इच्छा हो और जिसे पूरा किया जा सके । इसके लिए सुसंगठित नीति होनी चाहिए, जिसके बिना आप उद्देश्य को आसानी से पूरा नहीं कर सकते ।

इसे हम एक उदाहरण द्वारा समझ सकते है, मानो कि आपका उद्देश्य एक कार खरीदना है तो सबसे पहले आपको यह सोचना चाहिए कि क्यों खरीदना चाहते है, इसकी क्या उपयोगिता है, इसे रखने के लिए आपके पास आवश्यक स्थान है कि नहीं, क्या इसे खरीदने के लिए पैसा है कि नहीं, क्या इसका तेल खर्च आप पूरा करने में सक्षम है कि नहीं इत्यादि । इसी तरह आपके जीवन के किसी भी उद्देश्य पर सोचे और उसे पूरा करने हेतु सही नीति बनाए ताकि आप अपने जीवन को सार्थक बना सकेंगे ।

कितने ही महापुरूषों ने अपने जीवन का उद्देश्य सफल बनाने में सोच समझकर अपनी शक्ति और नीति के बल पर अपना और अपने देश का नाम रोशन किया जैसे विवेकानंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि ।

आज के इस बनावटी युग व भाग-दौड़ की जिन्दगी में हमें अपने जीवन को सही दिशा व सुसंगठित मार्ग पर चलाना चाहिए ताकि हम आगे बढ़ सके, तथा अपनी और अपने परिवार की अभिलाषा पूरी कर सके ।

❐❐❐

लालची तोता

कृष्णा कुमार
लेप.

एक जंगल में तोतों का समूह रहता था । वे तोते हर रोज सुबह हजारों मील यात्रा पर जाते थे और शाम को अपने घोसलों में लौट आते थे । तोतों के समूह में सभी के अपने अपने परिवार थे । तोते अपनी तो उड़ान के लिए सदा प्रसिद्ध रहे हैं । इस लिये बुढ़ापे में सबसे पहले उनकी आंखें कमजोर हो जाती हैं ।

तोतों के एक परिवार में माता-पिता बूढ़े हो गये थे । उनका बेटा उनके लिए फल आदि ले आता था । बूढ़े माता पिता घोसलें में बैठें ही खा लेते और सुख से रहते । वह तोता अपने माता पिता की सेवा में कोई कमी नहीं रखता था, किंतु वह स्वभाव का मनमानी था । माता पिता का कहना न मानना और मनचाह सैर सपाटे करना उसकी आदत बन गई थी ।

एक दिन उस तोते ने समुंद्र के बीच में एक सुन्दर द्वीप देखा और वही उड़ चला । द्वीप पर पहुंचकर उसने आम के पेड़ो को देखा । उनमे बड़े-बड़े रसीले और मीठे आम लदे हुए थे । ऐसे आम तो उसने कहीं पर नहीं देखा था । उसने जल्दी कुछ आम खाए और एक एक आम लेकर वापस चल दिया ।

अपने घोसले में आकर उसने वह आम अपने बूढ़े माता-पिता को खिलाया । उसके माता-पिता अंधे अवश्य थे, किंतु उन्होंने आम खाते ही कहा - 'क्या तुम समुंद्र पार हजारो मील दूर स्थित द्वीप पर गए थे ?' हां वहां बड़े रसीले फल है । 'लेकिन वह स्थल हमारी सीमा से बाहर है । लालच में पड कर सीमा तोड़ने से हानि की आशंका होती है ।'

किन्तु वह तोता भला कहां मानने वाला था । वह रोज ही वहां जाने लगा । उसके मन में हर दिन उन फलों के लिए लालच बढ़ने लगा । एक उसने आवश्यकता से अधिक फल खा लिये । उस दिन उसने माता-पिता के लिए भी रोज से ज्यादा बड़ा फल तोड़ा ।

यात्रा लम्बी थी और बोझ अधिक था । ज्यादा फल खाने के कारण वह जल्दी ही थकने लगा । बड़े फल का बोझा भी उड़ान में बाधा उत्पन कर रहा था । वह जितना जोर लगाता उतना ही थक रहा था । समुंद्र में गिर पड़ा और डूब गया ।

अब अन्य तोतो ने उसके माता-पिता को यह खबर दी तब वे बोले- 'हम जानते थे कि एक दिन लालच में पड़कर वह अपनी जान खो बैठेगा । लालची आदमी का यही हाल होता है ।''

सीख : लालच बुरी बला है । ❐❐❐

राजभाषा अधिनियम 1963

प्रफुल केरकेट्टा
क.हि.अ

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) के अन्तर्गत हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किये जाने योग्य दस्तावेज ।

1. सामान्य आदेश
2. ज्ञापन
3. अधिसूचना
4. संकल्प
5. नियम
6. करार
7. संविदा
8. टेण्डर
9. अनुज्ञाप्ति
10. अनुज्ञा-पत्र
11. सूचना
12. प्रशासनिक और अन्य प्रतिवेदन
13. प्रेस विज्ञप्ति
14. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गये प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागजात ।

❐❐❐

नारी-कल आज और कल

श्रीमती कमला नायक
व.ले.प.अ

भगवान कि सृष्टि में नारी और पुरूष एक डाल के दो फूल जैसे हैं । दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं । लेकिन हमेशा समाज में पुरूष का पलड़ा भारी होता आ रहा है । फिर भी शास्त्रों में नारी को कुछ कम मान्यता नहीं दी गई हैं । शास्त्रों के अनुसार नारी को दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती, मनिषा आदि देवी के रूप में पूजा जाता है । उनके दो रूप हैं, एक तरफ वह ममता और करूणा की बहती हुई झरना और दूसरी तरफ वह सृष्टि विनाशकारी रक्तमुखी देवी कात्यायिनी भी है । जब से एक सभ्य समाज का सृजन हुआ है, तब से हमने नारी को उसके पूर्वज की जन्मदात्री के रूप में पाया हैं, उसके मन में पवित्रता, तन में दृढ़ता, हृदय में ममता और आभूषण में लज्जा शोभा देती थी । उसका बाहरी आवरण कोमल और इरादा मजबूत था, लेकिन शिक्षा की कमी के कारण उनके अन्दर ईर्ष्या, प्रलोभन जलन आदि विनाशकारी गुण भी मौजूद थे ।

कल की नारी, जो अतीत की तरफ इशारा करती है, ज्यादातर धर्मान्ध, अनपढ़, डरपोंक, शोषित, सहमी और दबी हुई सी पुरूषों पर अधिक आश्रित थी । बचपन में पिता, शादी के बाद पति और विधवा होने के बाद पुत्र के अधीन रहती थी । लेकिन यह नही है कि अतीत में कोई महयिसी नारी नहीं थी । कतिपय नारियां जिन्हें पिता माता का सहारा मिला था, वो समाज के लिए मिसाल छोड के गयीं हैं । उनमें से रानी लक्ष्मीबाई, रजिया सुल्तान, विदुषी खन्ना, गार्गी मैंत्री आदि नारियां अपनी-अपनी वीरता और महानता की पराकाष्ठा के लिए सबके नमस्य रहीं हैं । ज्यादातर नारियां उस समय आर्थिक, मानसिक, शैक्षिक, सामाजिक, प्रशासनिक आदि सभी क्षेत्रों में दुर्बल तथा पराधीन थी । शिक्षा के प्रचार-प्रसार न होने और पुरूषों के द्वेष भाव का शिकार होने के कारण पर्दा प्रथा, कन्याभ्रूण, बलिदान प्रथा, बाल विवाह प्रथा सतीदाह प्रथा आदि कुरीतियां नारियों के जीवन को अस्त व्यस्त करती थीं । वे नाम से केवल जीती थीं । ज्यादातर उनकी तकदीर पत्थर के नीचे दबी हुई थी, उनकी अपनी कुछ पहचान न थी ।

समय के प्रवाह में देश स्वाधीन हुआ, देश के कर्णधार तथा महान नेता नारी शिक्षा नारी स्वाधीनता तथा नारी के रहन-सहन के लिए उच्च आकांक्षाएं पोषण करने लगे । नारी, पुरूष की भोग वस्तु तथा बच्चे पैदा करने की मशीन के बदले परिवार गठन, समाज गठन और राष्ट्र गठन में उनकी भूमिका को महत्व देने लगे । उनकी प्रेरणा में अनुप्राणित होकर कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित, कमला नेहरू और कितनी सारी महिलाएं उच्च शिक्षा हासिल करके राष्ट्रगठन में शामिल होने लगी, और अपना नाम इतिहास के पन्नों पर छोड़ गयीं । फिर भी नारी शिक्षा और नारी प्रगति की आंखों देखी सफलता हासिल नहीं हुई है । उनकी आगे बढ़ने की इच्छा, कुछ कर दिखाने की इच्छा अपने आप ही मुरझा जाती थी । सरकार उनके लिए बहुत कानून बनाती थी, लेकिन गलत प्रयोग के कारण और लोगों की सचेतनता की कमी के कारण समाज में आशानुरूप सुधार नही होता था । फिर भी नारी प्रगति तेजी न होकर धीमी गति में चलती थी ।

आज देश स्वाधीन होने के 66 साल के बाद, नारी प्रगति की स्थिति में ज्यादा सुधार परिलक्षित हो रहा है । सरकार द्वारा चलाई गई नारी जागरूकता कार्यक्रम के लिए आज नारी जल, स्थल, आकाश सभी स्थानों पर अपनी दक्षता प्रतिपादित कर रही है । कहावत है कि ''गांव की स्वच्छता धोबी घाट से पता चलता है, और देश की प्रगति नारी शिक्षा से पता चलता है'', अगर परिवार में एक नारी को शिक्षित किया जाए तो एक परिवार शिक्षित हो जाएगा । इस सिलसिले में सरकार नारी शिक्षा तथा नारी स्वाधीनता की सभी व्यवस्थाएं यथा नारी के लिए संसद में, शिक्षा क्षेत्र में, ग्राम पंचायत में और उच्च शिक्षा क्षेत्रों में स्थान आरक्षण की योजना को लागू किया है ।

आज की नारी अपने संवेदनाओं के जरिए न केवल सर्वश्रेष्ठ कृति का निर्माण करती है अपितु उन्ही संवेदानाओं, भावनाओं, अहसासों और मनोबल के जरिए वह हर क्षेत्र में कामयाब रही है । अपने अथक परिश्रम से नित नए अवसरों को प्राप्त करती है और अपनी एक सशक्त पहचान बना रही है, राष्ट्र गठन में, शिक्षा प्रवर्तन में, तकनीक कुशलता प्रदर्शन में, खेल कूंद में, साफ्टवेयर क्षेत्र में, समाज सेवा में, पर्वत आरोहण में, तथा अंतरिक्ष यात्री बनने में आज की नारी देश को गौरवान्वित कर रही है । पहले वह सहमी व दबी हुई थी, परन्तु आज वह अपने पैरों पर खड़ी हो चुकी है, आर्थिक रूप में सबल बन रही है तथा परिवार में आर्थिक योगदान देकर पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है । उसने दिखा दिया है ''हम किसी से कम नहीं'' इस सिलसिले में हम इन्दिरा गांधी, श्रीमती प्रतिभा पाटिल, ममता बनर्जी, जयललिता, उमा भारती, सुषमा स्वराज, मायावती, निरूपमा राव नन्दनी सतपथी आदि नारियां प्रशासनिक क्षेत्र में, लता मंगेशकर, आशा भोसले,

कविता कृष्ण मूर्ती, संयुक्ता पाणिग्राही, सोनाली मानसिंह, नन्दिता दास, ऐश्वर्या राय बच्चन, हेमामालिनी आदि संगीत, नृत्य और सिनेमा क्षेत्र में, बछेन्द्री पाल और कल्पना चावला आदि पर्वतारोहण तथा महाकाश चारी के कारण मेधा पाटेकर, तुलसी मुन्डा, मदर टेरेसा, समाज सेवा के क्षेत्र में, पी.टी.ऊषा, सायना नेहवाल खेल कूद में नाम प्रसिद्ध किया है ।

पाकिस्तान में 16 वर्षीय एक स्कूल छात्रा मलाला इब्सुफजाई नारी शिक्षा के लिए प्रोत्साहन देने के कारण तालिबान के कुछ विद्रोहियों ने उन पर गोली चलाई थी । लेकिन वह बच गयी उसकी उस प्रशंसनीय एवं साहसिक काम के लिए जातिसंघ ने नवम्बर 10 तारिख को ''मलाला दिवस'' का नाम दिया है । इतनी छोटी उम्र में इतनी बड़ी प्रतिभा का परिचय देकर उसने सम्पूर्ण जगत को आश्चर्य चकित कर दिया है । हाल ही में ओड़िशा की लिंकन सुबुद्धि नाम की युवती ने नोयडा में बाल विवाह का विरोध करके कुछ लोगों के आक्रोश का शिकार बन कर आहत हुई थी । और भी प्रशसंनीय बात है कि अरून्धती भट्टाचार्य, चन्दा कोचहार, काकु नाहटे, शुभलक्ष्मी पानसे, अर्चना भार्गव, शिख शर्मा, भेदिका भण्डारकर आदि महलिाएं देश की विशिष्ट संस्था में मुख्य परिचालक तथा निर्देशक के पद पर तैनात है । इससे पता चलता है कि मन मे दृढ़ता रखने से परिपाक्षिक सुविधा मिलने से हर लड़की अपनी लक्ष्मण रेखा पार करके अपनी मंजिल की तरफ बढ़ सकेगी । सरकार ने विधेयक पारित करके विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के लिए स्थान आरक्षण किया है जोकि सराहनीय काम है । इसके अतिरिक्त गर्भवती महिलाओं के लिए 'ममता' 'आशा' और विभिन्न कर्म योजना का भी प्रचलन किया था । तुलनात्मक रूप में अभी महिलाओं की काफी प्रगति हुई है । सभी परीक्षाओं में लड़कियां प्रथम स्थान हासिल कर रही हैं । स्वयं सेवी संघ का गठन करके अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर रही है । बहुत सारे परिवार में पहले जैसी बेटी को कलंक और बेटी पैदा करने वाली मां को कलंकिनी नहीं समझा जाता । आजकल अनेक परिवार कन्या संतान को लेकर भी खुश हैं । सिर्फ देश में नहीं विदेश जा कर बहुत लड़कियां अपने देश का नाम रोशन किया है । लेकिन अफसोस की बात है कि देश की प्रगति के साथ-साथ नारी शिक्षा तथा नारी स्वाधीनता के बारे में जागरूकता काफी होने के बाद भी आज नारियों को लेकर कितनी सारी कुप्रथाएं जैसे कन्या भ्रूण हत्या, दहेज कन्या संतान की उसे हत्या न करने का, व्याकुल निवेदन सुनाई दे रहा है । बेबश माँ अनचाह गर्भपात करते करते थक गई है । प्रसूत पूर्व लिंग परीक्षण कानुनन अपराध है । सरकार की ओर से गर्भपात तथा लिगं परीक्षण रोकने के लिए कानून बनाया गया है । फिर भी लोग कानून से भाग कर कन्या भ्रूण की हत्या कर रहे हैं । आज कल समाज में सबसे दर्द देने वाली घृण्य घटना

है नारी बलात्कार । स्वाधीनता के इतने दिन के बाद भी नारी असुरक्षित है । ऐसा एक दिन भी नहीं गुजरता कि समाचार पत्र में नारी बलात्कार की घटना छपी न हुई हो । कोख और कोख के बाहर सभी जगह पर नारी असुरक्षित है ।

सरकार की तरफ से नियम कानून बनाने तथा दोषी को पकड़ के दण्ड देने के बावजूद भी रोज कितनी सारी बेटियाँ, बहुएं बलात्कार का शिकार होकर जांन गवां देती हैं या एक सम्मान हीन जीवन यापन करती है । इस प्रकार सामाजिक कलंक को मिटाने के लिए सिर्फ सरकार के द्वारा कानून प्रणयन या प्रयोगीकरण काफी नहीं है, इसके लिए समाज में रहने वाले लोग, लड़कियों, एवं उनके माता-पिता आदि सबका सहयोग और सचेतनता की आवश्यकता है । शिक्षित और नेतृत्व में रहने वाली नारियों को गांव की अनपढ़ अनजान बहू बेटियों के लिए कानून तथा उनकी सुरक्षा का रास्ता बनाना चाहिए । आज कल सरकार की तरफ से लड़कियों को बलात्कार तथा आक्रमण से अपनी प्रतिरक्षा के लिए कराटे जूडों आदि सुरक्षा प्रणाली के परीक्षण की व्यवस्था की गई है फिर भी सरकार कानून जैसे अस्त्र के सहारे दोषी को सशक्त दण्ड विधान करने से समाज में कलंक मिट जाएगा और नारियां सुरक्षित महसूस करेंगी । गांधी जी ने कहा था, ''जब तक मध्य रात्रि में एक नारी अकेली सुरक्षित घूम नहीं सकती तब तक स्वाधीनता का कोई मूल्य नहीं । ''गांधी जी के उस स्वप्न को साकार करने के लिए समाज और सरकार नारी को समुचित सुरक्षा देना चाहिए । अतीत और वर्तमान में नारी प्रगति की स्थिति को अनुध्यान करने से पता चलता है कि नारियां आगे बढ़ रही है, उनके रास्ते में आने वाली रूकावट एक दिन जरूर हट जाएगी और नारी अपनी मंजिल को छूं लेगी । ज्यादातर नारियां इस दुर्दशा के लिए नारियां जैसे कि सास, ननद, ससुराल की अन्य महिलाएं ही जिम्मेदार हैं । खुद नारी जो ये दुर्दशा भुगत रही है, नारी स्वाधीनता के नाम से असंगत परिधान से दूर रहना चाहिए, और देर रात तक पुरूष बन्धु के साथ घूमना फिरना नहीं चाहिए । ससुराल वालों तथा बुजर्गो के साथ उन्हे अच्छा व्यवहार तथा कदर करना चाहिए । आर्थिक रूप से स्वावलम्बी होने के लिए आजकल नारियां न्यूक्लियर परिवार पसंद करती हैं, जहां सास, ससुर जैसे बुजुर्गीं का स्थान नहीं । नतीजों में बच्चे लोग अपने बचपन की खुसी को हासिल किए बिना मानसिक मनाव के शिकार हो रहे हैं । आजकल की उच्च आकांक्षा रखने वाली नारी इस बात को ध्यान में रखना चाहिए । अपने भविष्य के लिए बच्चों के भविष्य की बलि नहीं देना चाहिए । नारियों को अपनी प्रगति के साथ-साथ नारी सुलभ गुणों का भी ध्यान देना चाहिए ।

आज महिलाओं के परिधान, बोलना, चलना, रहन सहन में जो परिवर्तन आया है इसे देखकर कोई भी निश्चित रूप से कह सकता है कि नारियां आगे बढ़ रहीं है । और भविष्य में काफी तरक्की करेगीं जो दूसरे देश के लिए तथा विश्व के लिए एक मिसाल बन जाएगा । रॉबर्ट फ्रास्ट की एक उक्ति यहां कहना जरूरी है- "The woods are lovely, dark, and dark, and deep, But I have promises to keep, and miles to go before I sleep, And miles to go before I sleep." ''नारी प्रगति तथा देश की प्रगति के लिए हमको और बहुत रास्ता चलना पड़ेगा । सामने आने वाला सब बाधा बंधन के बाबजूद आज सभी महिलाएं इन्दिरा गांधी, कल्पना चावला, सायना नेहवाल, मेधा पाटेकर आदि महिलाएं जैसी प्रतिभावान होने के लिए कोशिश करना चाहिए और मलाला, निर्भया जैसी मजबूत इरादा और संग्रामी मनोभाव रखना चाहिए ताकि नारी जाति की जय जयकार देश के अन्दर और देश के बाहर भी सुनाई दे । लेकिन घर, बाहर, समाज, देश, युवक और खुद नारियों के सहयोग बिना यह संभव नही हो पायेगा । नारी प्रगति को बढ़वा देने के लिए शास्त्र का कहना सबको याद रखना चाहिए कि ''यत्र पूज्यंते नारी तत्र रमन्ते सर्व देवता'' ।

❐❐❐

जीवन में संघर्ष

स्तानिसलास किन्डो
व.ले.प

एक गांव में एक गरीब परिवार रहता था । उन गरीब माता-पिता की चार संतानें थीं, तीन लड़के और एक लड़की । इन में से मझले का नाम प्रताप था । उन गरीब माता-पिता ने चारों में से केवल दोनों छोटे बच्चों को ही पढ़ने के लिए भेजते थे । जब बच्चे छोटे ही थे तब प्रताप के पिता रोजगार के लिए असम राज्य चले गए थे ।

अब सभी बच्चों का पालन पोषण का भार उनकी मॉ पर आ पड़ा । मां चारों बच्चों को खाना ठीक से नहीं दे पाती थी कभी-कभी वे खाली पेट ही सो जाते थे । बड़े बच्चे दूसरो के घर में काम करते तो उनका चूल्हा जलता था । दोनों छोटे बच्चे किसी प्रकार स्कूल जाते थे । कभी-कभी खाना न होने पर भी स्कूल जाना नहीं छोड़ा । इसी प्रकार प्रताप ने पांचवीं क्लास पास किया । पढ़ाई में प्रताप अच्छा था, छठवी क्लास में नाम लिखाना पडा तो उसके पास रूपये नहीं थे । परन्तु तब उसके पिता घर लौटे तो उन्होने अपने जमीन में से कुछ हिस्सा गिरवी रख कर पैसो का प्रबंध किया ।

जब दो साल बाद प्रताप ने मिडिल पास किया तो उसके घर में खुशी की लहर आ गई कारण उसके परिवार में कोई शिक्षित नहीं था । अब प्रताप को आठवीं में नाम लिखाना था फिर भी रूपये की कमी रूकावट का कारण बनी हुई थी । फिर से उधार करके उसका प्रवेश कराया गया । लेकिन किताबों, कापियों एवं यूनीफार्म के लिए रूपये नहीं थे । जैसे-तैसे करके इनका भी जुगाड़ कर लिया गया । हाईस्कूल में उसे बहुत दिक्कतें झेलनी पड़ी, पर इन सब की परवाह न करते हुए अपनी पढ़ाई पूरी की। वह मैट्रिक द्वितीय श्रेणी में पास हुआ । उसके माता-पिता बहुत खुश हुए, पर अब वह कालेज जाना चाहता था । परन्तु यहां भी रूपये की कमी रूकावट का कारण बनी । प्रताप के परिवार के लोग गांव के एक धनी परिवार के पास काम करने लगे उसने भी उनकी सहायता की । ऐसा करके बड़े कष्ट से कालेज की पढ़ाई पूरी की ।

अब प्रताप नौकरी की तलाश में लग गया, कारण उसे अपनी पढ़ाई के लिए जो कुछ उधार लेना पड़ा था उसे लौटाना था । प्रताप बड़ा ईश्वर भक्त था इसलिए हर विपत्ति में उसको ईश्वर की सहायता प्रायः मिलती थी ।

प्रताप ने कई इन्टरव्यू दिए पर असफल रहा । फिर भी वह अपना धीरज नहीं खोया कारण उसका ईश्वर पर पूरा विश्वास था । वह रोज ईश्वर से प्रार्थना करता, कभी भी प्रार्थना किए बिना बिस्तर पर नहीं जाता । ऐसे ही इन्टरव्यु देते-देते अखिरकार उसने नौकरी पा ही ली । जब उसने परीक्षा का रिजल्ट देखा तो खुशी के मारे फूला नहीं समय क्योंकि उसके परिवार की गरीबी अब दूर होने वाली थी ।

आज प्रताप एक केन्द्रीय सरकार के दफ्तर में नौकरी कर रहा है उसके परिवार में सभी खुशी से जीवन बिता रहे हैं । प्रताप इस सफलता के लिए ईश्वर को ही धन्यवाद देता हैं ।

❐❐❐

एक नई सीख

सुरेश चन्द्र महापात्र
व.ले.प

यह कहानी राजस्थान की है । एक राजा थे । उनकी एक मोटी महारानी थी । वह रोज एक प्रकार का खाना खाकर ऊब चुकी थी । एक दिन जब वह हिरन का मांस खाने की जिद करने लगी, तब राजा ने एक शिकारी को हिरन का मांस लाने के लिए आदेश दिया । शिकारी सुबह से हिरन की खोज में घूम-घूम कर थक गया । कुछ घंटे बाद उसे हिरन का एक झुंड नजर आया । शिकारी ने तुरन्त धनुष निकाल कर हिरनी पर निशाना साधा, जब हिरनी की नजर शिकारी पर पड़ी तो, वह रोकर शिकारी से प्रार्थना करने लगी, ''मुझे थोड़ी देर के लिए जाने दो, मेरा पति बीमार है और बच्चा भूखा है, मैं उन्हे दवाई देकर और बच्चे को दूध पिला कर निश्चय लौट आऊंगी । शिकारी बड़ी मुश्किल से राजी हुआ । हिरनी चली गई । बहुत देर के बाद अपने पूरे परिवार के साथ जब वह आई तो शिकारी चकित रह गया । परिवार के सारे हिरन कहने लगे पहले मुझे मारो । शिकारी ने उनकी बातें सुन कर धनुष रख दिया । उसके विवेक ने उसे दंशन किया, वह भारी मन से खाली हाथ लौटा । उसने लौट कर राजा को सारी बातें सुनाई, ''महाराज मैं तीन हिरन में से किसी को नहीं मार सका । इसलिए आप जो दण्ड देना चाहते हैं दीजिए, मगर मैं किसी हिरन को नहीं मार सकता । राजा ने शिकारी की भावनाओं को समझा और उसे छोड़ दिया ।

उसके बाद राजा रानी को समझाने के लिए उसके पास गये उससे बोले, ''महारानी हम किसी की जान लेकर अपना पेट भरे तो यह हमारे संस्कारों के खिलाफ है । रानी ने भी राजा की बात समझी, और अपनी इच्छा को मिटा दी और यह सीख कि किसी की इच्छा दूसरे की जान से बड़ी नहीं हो सकती ।

❐❐❐

खरबूजे ने रंग बदला

पी. श्रीनिवास राव
व.ले.प

सुना है पृथ्वी लोक के अलावा एक ऐसा भी लोक है जहां जीवन है । जहां मंगल वहीं मंगल है । सुख-दुःख, गुण-दोष, मानवता-अमानवता से परे शांत एवं आनंदित लोक जो, स्वर्ग के समान है । त्रिलोक संचारी, ब्रम्हा-नंदन, सारे फसाद की जड़ नारद मुनि की दृष्टि से यह शांत लोक बच न पाया । उनके दिलो दिमाग में हलचल होने लगी कि यदि ऐसा एक आनंदित लोक है तो देवताओं का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा । पीड़ा ही न होगी तो भगवान का स्मरण भी न होगा । उन्होंने देवराज इन्द्र के समक्ष इस बात को नमक-मिर्च लगाकर प्रस्तुत किया । इन्द्र को सदैव की भांति सिंहासन ड़ोलता नजर आया । भाग-भाग आए नर को नियंत्रित करने वाले नारायण के पास, कहने लगे- ''कृपा करूणा निधान ! मेरी सत्ता तो गई ! नारायण (मुस्कराए) बोले- ''मेरी शरण में आए हुए को जरूर अभय दान मिलेगा । मंगल में डूबे मंगलवासी को सृष्टि का नियम समझाओ, नवरस का परिचय दो । सदैव आनंद की जिंदगी में क्या मजा !

नारद पुष्पक विमान से उतरे और अपनी दिव्यवाणी में मंगल लोक के महामहिम को पृथ्वी लोक के नवरस से भरे संतुलन का ऐसा मायाजाल दिखाया कि बेचारे महामहिम को यह लगा कि वाकई वे कुएं के मेंढ़क हैं । उन्हे भी पृथ्वी लोक जाकर ज्ञान बटोर कर उस ज्ञान का प्रचार-प्रसार करना होगा वरना उनकी सभ्यता तो पिछड़ जाएगी । उन्होंने तुरंत बड़े-बड़े विशेषज्ञों, बुद्धिजीवियों की सभा बुलाई । कड़े शब्दों में आदेश दिया- ''आत्मा को उज्जवल बनाओ, तुरंत ज्ञान से हृदय-दीपक जलाओ ।

एक विशेषज्ञ- ''प्रभु ! यहा हम संपूर्ण हैं ।

नारद मुनि- ''अहंकारी ! पृथ्यी लोक में महामहिम के आगे किसी की जुबान नहीं चलती । केवल आज्ञा का पालन होता है, अपनी बुद्धि को ताक में रखकर ।

महामहिम ने ऐसे विचित्र लोक से ज्ञान बटोरने में तत्परता दिखाई । भेज दिया विशेषज्ञों एवं बुद्धिजीवियों को । जैसे ही उन्होंने भूलाके में कदम रखा, जांच अधिकारियों ने उन्हें घेर लिया कहा- ''लाइसेंस दिखाओ ? मंगलवासी'' हम दूसरे ग्रह से आए हैं । अधिकारी ''तो तुम्हें कर देना होगा, भूमि कर ।

आनंदित मंगलवासी कर से अनजान, नारद की तरफ देखा तो अधिकारी ने उन्हें भी नहीं छोड़ा । अतंतः अपनी दैवी वीणा देकर पीछा छुड़ाना पड़ा ।

विशेषज्ञों की समझ में कुछ-कुछ धूर्तता आ रही थी । फिर भी वे अपने अस्तित्व को खोना नहीं चाहते थे । नारद भांप गए कि उन्हें थोड़ा अनुभव देना होगा ।

अल्प ज्ञान के प्रकाश से विशेषज्ञ एवं बुद्धिजीवि आगे बढ़ रहे थे । असमंजस में थे कि क्या नया ज्ञान जरुरी है ? नारद घबरा गए कि उन्होंने ज्ञान न बटोरा तो ?

तभी उन्हें दिखाई दिया कि मंगलवासी (बुद्धिजीवि) एक मृत आदमी की सेवा में लगे हैं । तभी एक कानून का ठेकेदार उन्हें पकड़ कर उन पर हत्या का आरोप लगा दिया । दूर खड़ा पृथ्वी वासी मन ही मन अपने कुंठित विवेक को धन्यवाद देता था कि चलो वह इस मानवता के चक्कर से दूर रहा । वरना, वो होता सलाखों के पीछे ।

केस पर केस, सुनवाई पर सुनवाई । मंगलवासी हैरान, परेशान । नारद जी के नारायण की सिफारिश से कुबेर का खजाना खुलवा दिया गया । कुबेर का खजाना अदालत की तरफ बहने लगा । अंतिम सुनावाई हुई और बुद्धिजीवि, विशेषज्ञ मानवता का अच्छा पाठ पढ़ चुके थे और उन्हें नवरस का सबक मिल चुका था ।

वे ज्ञान बटोर कर उसका प्रकाश चारों ओर फैलाने लगे । जिसके चकाचौंध से महामहिम की आंखें चौंधियाने लगीं और उन्होंने आंख खोलते ही बंद कर दिया । उन्हें समझ में आ चुका था कि पृथ्वी लोक के खरबूजे को देखकर मंगल लोक के खरबूजे का रंग बदल चुका है ।

❐❐❐

सबर का फल

श्रीमती सुदेष्णा दास
स.ले.अ.

तोलावर गांव में खुदिराम नाम का एक व्यक्ति रहा करता था । उसके पास एक सुन्दर काला घोड़ा था । सुबह से लेकर शाम तक वह अपने घोड़े 'तारजन' के पीछे ही पड़ा रहता था, उसका खाना, रहना, साफ सुथरा करना, उसकी सजावट करना, मानो एक बेटे की तरह वह 'तारजन' की देखभाल करता था ।

खुदिराम का अपना एक बेटा भी था । वह उसे भी बहुत लाड़ प्यार से पाल रहा था । उसकी सारी इच्छाएं पूरी कर रहा था । कहने की बात यह है कि बेटा और घोड़ा दोनो के दोनो ही खुदिराम के बेटे थे ।

एक दिन की बात है, अचानक 'तारजन' कहीं लापता हो गया, खुदिराम इधर-उधर, ढूंढने लगा, गावं के आस-पास जो गांव थे वहां भी ढूंढा, गांव वाले ने उसे ढूंढने के लिए उसकी सहायता की , पर वह कहीं पर न मिला। महीनो बीत गये पर 'तारजन' का कुछ पता नहीं चला । वास्तव में खुदिराम परेशान हो गया, उस वक्त गांव वालो ने एक-एक कर के उससे कहने लगे ''देखो आजकल तुम्हारे भाग्य के ग्रह शायद मन्द चल रहे हैं, तुम्हारा समय अनुकूल नहीं है, तुम्हारा बुरा वक्त चल रहा है, तुम ऐसा करो वैसा करो। पर खुदिराम ने कुछ नहीं सुना अपने मन को शांत रखकर इन्तजार के अलावा और कुछ भी नहीं किया ।

तीन महीने के बाद एक दिन अचानक अन्य दो घोड़ों के साथ 'तारजन' अपने मालिक के पास आ पहुंचा, अब खुदिराम के पास एक साथ तीन-तीन घोड़े हो गए यह देख कर गांव वाले खुदिराम से कहने लगे ''अब तुम्हारा ग्रह अच्छा चल रहा है, एक के जगह अब तुम्हारे पास तीन-तीन घोड़े हैं । तुम बहुत भाग्यवान हो ।'' फिर भी खुदिराम ने कुछ नहीं कहा ।

खुदिराम का बेटा अपनी पढ़ाई खत्म करने के बाद शहर में नौकरी कर रहा था । एक दिन अचानक वह दुर्घटना का शिकार हो गया । उसके पैर और कमर को चोट लगी थी उसकी रीढ़ की हड्डी टूट गई थी । इलाज के बाद वह और काम नहीं कर सका, वह गांव को लौट आया । बेटे की यह हालत देख कर गांव वाले कहने लगे ''देखो खुदिराम, तुम्हारा ग्रह अभी अच्छा नहीं चल रहा

है, तुम्हारा भाग्य मंद है ।'' रोजगार करने वाला नौजवान बेटा कैसे आकर घर में बेकार पड़ा है, आज तुम क्या करोगे । खुदिराम ने किसी को भी कुछ नहीं कहा ।

उन दिनों सीमा पार से आतंकवादियों का आक्रमण चल रहा था, सरकार की ओर से सभी दफ्तरों से स्वस्थ नौजवानों को चुन-चुन कर आनेवाले युद्ध के लिए सेना में भर्ती की जा रही थी, उस दफ्तर के लोग भी भर्ती हुए जहां खुदिराम का बेटा नौकरी करता था । वह स्वस्थ रहता तो जरुर शामिल होता, लेकिन वह बच गया । गांव वाले पुनः कहने लगे ''ओ खुदिराम, देखो तुम्हारा भाग्य कितना अच्छा है, ''तुम्हारे बेटे की दुर्घटना होने के कारण उसे युद्ध से छुटकारा मिला ।

अब खुदिराम ने अपना मुंह खोला और कहा, ''देखो भाई, ऊपर वाला ही हमारे हर काम-काज को नियंत्रित करता है, उनके उपर भरोसा करके सबर करो । देखो बाद में उसका फल कितना मीठा होता हैं ।''

अब गांव वालों को समझ में आया कि सबर का फल 'मीठा' ही होता है ।

❐❐❐

राजभाषा प्रयोग की दृष्टि से क्षेत्र वर्गीकरण

प्रफुल केरकेट्टा
क.हि.अ.

सम्पूर्ण देश को राजभाषा प्रयोग के आधार पर तीन भागों में रखा गया है ।

'क' क्षेत्र :- उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखण्ड, अंडमान निकोबर व दिल्ली ।

'ख' क्षेत्र :- महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब व चंडीगढ़, संघ-राज क्षेत्र ।

'ग' क्षेत्र :- आंध्रप्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, तामिलनाडु, कर्नाटक, केरल, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल, मणिपुर, मिजोराम, मेघालय, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा, जम्मू-कश्मीर, गोवा, दादर एवं नगर हवेली, दमन-दीव, लक्षदीप, पण्डिचेरी ।

❐❐❐

हमारे व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है ।

- महात्मा गांधी ।

हिन्दी का प्रचार राष्ट्रीय काम है, निःसन्देह वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी असली अर्थ में 'राजभाषा' होगी । हिन्दी राष्ट्रीय एकता का माध्यम है । इसकी विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं से कोई शत्रुता नहीं ।

- डा. जाकिर हुसैन ।

हमारे संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है इसलिए हमें देखना है कि सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग हो ।

- राजीव गांधी ।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और मातृभाषा है । जो अपनी मां का अपमान करता है, उसका कोई सम्मान नहीं करता ।

- ज़ीन जैल सिंह ।

खुशी की कुंजी

मोहम्मद इमरान
लेप.

अफ्रीका में हैरी नाम का एक खुश और संतुष्ट किसान रहता था । बह खुश था क्योंकि वह संतुष्ट था, और संतुष्ट था क्योंकि वह खुश था ।

एक दिन उसके पास एक ज्ञानी व्यक्ति आया, उसने उसे हीरे की अहमियत और उनकी ताकत के बारे में बताया । ज्ञानी व्यक्ति ने कहा ''अगर तुम्हारे पास अंगूठी में धरने वाले परिमाण का हीरा हो तो तुम एक शहर खरीद सकते हो, और अगर तुम्हारे पास मुट्ठी के बराबर का हीरा हो, तो तुम शायद अपने देश के मालिक बन सकते हों ।

ऐसी बातें कह कर वह ज्ञानी व्यक्ति चला गया । उस रात किसान बिल्कुल नहीं सो सका । वह नाखुश और असंतुष्ट हो गया ।

अगले सुबह उसने अपने खेतों को बेचने का बंदोबस्त किया और अपने घर वालों की देखभाल का इंतजाम करके वह हीरे की खोज में निकल पड़ा । पूरे अफ्रीका में वह घूमता रहा, लेकिन कुछ न मिला । सारे यूरोप का चक्कर लगाने के बाद भी उसकी खोज पूरी न हुई । जब वह पहुंचा तब वह भावनात्मक, शारीरिक और आर्थिक कमी से बिल्कुल टूट चुका था । उसकी हिम्मत इतनी ज्यादा टूट चुकी थी कि उसने बार्सीलोना नदी में कूंदकर खुदखुशी कर ली।

उधर जिस व्यक्ति ने उसका खेत खरीदा था, एक दिन सुबह वह खेत से होकर गुजर रहा था, नहर के दूसरे किनारे पर सूरज की किरण जैसे ही एक पत्थर पर पड़ी तो इन्द्रधनुष की तरह सात रंग जगमगा उठें । उस व्यक्ति ने सोचा कि यह पत्थर बैठक खाने में सजाने के काम आएगा, और उसे उठा कर घर ले गया और बैठक खाना में सजा दिया । उसी दोपहर को वह ज्ञानी व्यक्ति फिर वहां आया, उसकी नजर जगमगाते पत्थर पर पड़ी तो उसने पूछा ''क्या हैरी वापस आ गया है ? नए मालिक ने जवाब दिया, ''नहीं, लेकिन आप क्यो पूछ रहे है ? तब ज्ञानी व्यक्ति ने कहा, ''सामने रखा वह पत्थर हीरा है, उसे देखते ही मैं पहचानता हूं । नए मालिक ने फिर कहा, ''नहीं, यह सिर्फ

एक पत्थर है । मैंने उसे नहर के पास पाया है । चलिए, मैं आपको दिखाता हूँ । वहा ऐसे बहुत सारे पत्थर पड़े है ।

वे दोनों वहां गए और पत्थरों के कुछ नमूने उठा लाए और जांच के लिए भेज दिए । सचमुच वे पत्थर हीरे ही थे । उन्होंने पाया कि उस खेत में दूर-दूर तक हीरे दबे हुए थे ।

सीख : जब हमारा नजरिया सही हो और हम संतुष्ट होते है, तब हमें अहसास होता है कि हम सब हीरे की खानों पर चल रहें है, जो अक्सर हमारे पैरो के नीचे होती है । हमें इसके लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं है । जरुरत है तो सिर्फ इसे पहचानने की ।

❐❐❐

सुन्दर कौन

मोहम्मद इमरान
लेप.

ढोलकपुर गांव में एक तेज विद्यार्थी राजू रहा करता था । वह एक आज्ञाकारी और होनहार विद्यार्थी था, लेकिन वह दिखने में काला था । उसके सहपाठी उसे कल्लू कह कहर चिढ़ाते थे और उसे कोई मित्र भी नहीं बनाता था । अपने सहपाठियों के इस व्यवहार से वह बड़ा आहत होता था और उदास रहता था। धीरे-धीरे वह हीन भावना से ग्रस्त हो गया जिससे उसकी पढ़ाई भी बाधित होने लगी ।

एक बार ढोलकपुर में मेले का आयोजन हुआ । मेले में एक आदमी गुब्बारे बेच रहा था । उसके पास लाल, पीला, नीला, हरा चारों रंग के गुब्बारे थे । जब कभी उसकी बिक्री कम होने लगती, तब वह हीलियम गैस से भरा एक गुब्बारा हवा में छोड़ देता । बच्चे उसे उड़ता देख, वैसा ही उड़ने वाला गुब्बारा पाने के लिए मचल उठते, जिससे उसकी बिक्री फिर से बढ़ जाती ।

राजू ने उस गुब्बारे वाले से पूछा ''अगर आप काले गुब्बारा छोड़ेंगे तो क्या वह भी उड़ेगा ? राजू की बात उसके दिल पे लग गई उसने प्यार से जवाब दिया, ''बेटा गुब्बारा अपने रंग की वजह से नहीं उड़ता, बल्कि उसके अंदर भरे गए गैस से ही उड़ता है । गुब्बारे वाले की बात सुन कर राजू बहुत प्रभावित हुआ और उसे यह अहसास हुआ कि सच्ची सुंदरता क्या है । वह फिर से नए उत्साह के साथ पढ़ाई में ध्यान दिया । अब उसके सहपाठियों का चिढ़ाना उसे उदास नहीं करता ।

अपनी अंदर की खूबियों को निखार कर राजू अपने जीवन में बहुत सफल हुआ ।

सीख : इंसान को उसके रंग, रूप, कुल, जाति या धर्म से नहीं बल्कि उसके अन्तर्निहित गुणों से पहचाना जाना चाहिए । क्योंकि गुण ही सच्ची सुंदरता है ।

❐❐❐

हमारा देश तब और अब

अविनाश कुमार
डी.ई.ओ.

हमारा देश हमेशा महान रहा है । प्राचीन काल में इसकी महानता एवं उपलब्धियां सम्पूर्ण विश्व में प्रचारित और प्रसारित हुई थी । इस काल में हमारा देश सम्पूर्ण विश्व का अगुवाई करता था । मध्य काल में हमारा देश सभी तरह के विदेशी आक्रमण, बर्बरता, क्रूरता एवं दासताओं को झेलते हुए भी अपनी प्राचीन उपलब्धियों एवं महानता पर कोई आंच आने नहीं दिया । सभी तरह का जुल्म सहते हुए भी अपनी संस्कृति एवं विरासत को बचाये रखा एवं सम्पूर्ण विश्व को दिखा दिया कि चाहे कितनी भी परेशानियां एवं क्रूरता सहन करना पड़े पर हम अपनी प्राचीन संस्कृति एवं महानता पर कोई आँच न आने देगें । महान बापू के नेतृत्व में हमने यह दिखा दिया कि अहिंसा के मार्ग पर कैसे हम शक्तिशाली अंग्रेजों को भगा सकते हैं । यही हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं महानता का बल है ।

अपनी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं महान उपलब्धियां का अनुसरण करते हुए हमने देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की स्थापना की । प्राचीन काल में लोकतंत्र भी भारत में था और आधुनिक युग में सबसे बड़ा लोकतंत्र भी भारत में है । लेकिन प्राचीन भारत के लोकतंत्र की तुलना में आधुनिक लोकतंत्र के स्वरुप में काफी अन्तर है ।

आधुनिक भारत के महान लोकतंत्र को चंद लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए दुरुपयोग कर इस को बदनाम कर रहे है । आज हमारा देश अपनी महानता को बचाए रखने के लिए संघर्ष करता नजर आ रहा है । आज हमारे देश में चारों ओर भ्रष्टाचार व्याप्त है । आज हर दिन कोई न कोई नया भ्रष्टाचार देखने को मिलता है । यू तो आज हमारे देश के सामने कई गंभीर समस्याएं है जैसे - गरीबी, अशिक्षा, भुखमरी, नक्सलवाद, आंतकवाद आदि, लेकिन इन सभी समस्याओं से अधिक भयानक समस्या है भ्रष्टाचार का व्यापक फैलाव। आज चारों ओर महंगाई का बोलबाला है । हर तरफ गरीबी देखने को मिलती है । अगर हम भ्रष्टाचार को समाप्त कर दे तो अन्य समस्याओं का समाधान काफी हद तक स्वतः ही हो जाएगा । आज हम सभी भारत वासियों को अपने देश की प्राचीन संस्कृति एवं महानता को अक्षुण्ण बनाए रखने की जरुरत है । इसके लिए हम सबको संकल्प करना चाहिए कि न तो भ्रष्टाचार करेंगे और न ही भ्रष्टाचार होने देंगें । तब हम भारत को पुनः वही प्राचीन महानता के समकक्ष पहुंचा पायेंगे और कहेंगे कि भारत महान था अब भी महान है और हमेशा महान रहेगा ॥ ❐❐❐

दूसरा जलियावाला बाग

शंकर नायक
से.नि.हि.अ.

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में पंजाब के जलियावाला बाग में सन 1919 के अप्रैल 13 तारीख को हुआ नरसंहार बहुत दर्दनाक था । इस नरसंहार में अंग्रेज सैनिकों द्वारा 379 लोग मारे गए थे आरै करीब 1200 लोग घायल हुए थे । इसी तरह की एक और घटना ओड़िशा में एक जगह पर सन 1942 के सितम्बर 28 को हुई थी, यहां पर एक साथ 28 लोग और बाद में एक अस्पताल में, ऐसे कुल 29 स्वतंत्रता सेनानी मारे गये थे । यह स्थान भद्रक जिले के बासुदेवपुर ब्लाक का ''इरम'' गांव है जिसे दूसरा जालियावाला बाग कहा जा सकता है ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत 1920 में गांधी जी के सलाह पर और कांग्रेस कमेटी के सहयोग से असहयोग आन्दोलन के रूप में हुई थी 1930 में नमक सत्याग्रह द्वारा स्वतंत्रता संग्राम अधिक व्यापक हुआ था, जिसमें गांधी जी की दाण्डी यात्रा प्रमुख थी । ओड़िशा में भी इसका प्रभाव बहुत अधिक था, बहुत से लोग इस में भाग लेकर जेल गये थे । इसके बाद 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन ओड़िशा के साथ - साथ पूरे भारत में उग्र रूप धारण किया था, ओड़िशा में यह शहर से लेकर गांव-गांव तक फैल गया था ।

''इरम'' गांव बासुदेवपुर से 16 किलोमीटर दूरी पर है, एक तरफ बंगाल की खाड़ी और अन्य तीन तरफ दो नदियों से घिरा हुआ है । भौगोलिक दृष्टि से यह स्थान पुलिस और अंग्रेज सैनिकों के लिए दुर्गम होने के काण यह आन्दोलन के लिए एक प्रमुख स्थान बन गया था । साल 1942 के सितम्बर 28 तारीख को इस गांव के मेलन मैदान में सौ-सौ लोग एकत्रित हुए थे । भारत छोड़ो आन्दोलन को साकार रूप देने के लिए एक सभा का आयोजन हुआ था । अंग्रेज सरकार के विरुद्ध आन्दोलन तेज करने के लिए स्वतंत्रता संग्रामी सब शान्तिपूर्ण ढंग से सभा में एकत्रित हुए थे, लोगों ने यह शपथ लिया था कि मरेंगे पर हटेंगे नहीं ।

अंग्रेज पुलिसवालों को इसकी सूचना मिल गई थी । वे सब आकर राधाकान्त पाढ़ी नामक एक जमींदार के घर में डेरा डाले थे । वह जमींदार अंग्रेजों का समर्थक था । पुलिसवालों का बिस्तर लेकर एक कर्मचारी जब जा रहा था मणि बेज नामक एक संग्रामी ने उससे बिस्तर छीन लिया और

उसे अपने पैरो से कुचल डाला । यह खबर जब पुलिसवालों के पास पहुंची तब वे गुस्से में आ गए, पुलिस फौज में उप निरीक्षक हेम पाणिग्राही और डी.एस.पी. कुंज बिहारी महान्ति थे, जिन्होंने गोली चलाने का नेतृत्व लिया था ।

शाम का समय था, पुलिसवाले ने तुरन्त आकर मैदान को घेर लिया । गांव वाले बन्दूक की आवाज से परिचित नहीं थे, जैसे ही गोली चली वे जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे । अवरोध होने के कारण लोग आसानी से भाग नहीं सके कुछ ही क्षण में भीड़ तितर-बितर हो गई । उस मैदान पर ही 28 लोग शहीद हो गए । वह शाम उनके लिए अन्तिम शाम बन गई, बाद में एक की मृत्यु अस्पताल में हुई थी । अहिंसा मार्ग में आन्दोलन कर रहे संग्रामियों पर पुलिस ने अत्यन्त निर्दय और बर्बर रूप से गोली चलाई थी, फिर भी लोगों ने निर्भीक होकर साहस के साथ सामना किया था । 56 लोग घायल हुए थे, जिनका बाद में उपचार किया गया । इस शर्मनाक और दर्दनाक घटना से पूरा देश स्तब्ध हो गया था । उस स्थान पर परी बेवा नाम की एक महिला संग्रामी भी शहीद हुई थी, जो की प्रथम महिला शहीद के रूप में जानी जाती है । जीवित बचे घायलों की आपबीती कहानी सुनने पर रोएं खड़े हो जाते है ।

इधर सभास्थल की उस दिन की वह भयानक घटना की जब याद आती है तो लोग भय से सिहर उठते है और उन शहीदों के लिए भक्ति और श्रद्धा के साथ नमन करते हैं । उस दिन का रक्त रंजित 'इरम' मैदान आज भी मौजूद है । वहां पर एक स्मृति स्तंभ का भी निर्माण किया गया है, जो स्वतंत्रता संग्राम का स्मृति चिह्न के रूप में खड़ा है, फिर भी जालियावाला बाग की तरह इसका विकास नहीं हो पाया है । इस स्थान के समुचित विकास के साथ-साथ व्यापक प्रचार-प्रसार होने पर निश्चित रूप से यह शहीद क्षेत्र स्वंतत्रता संग्राम से जुड़ा एक प्रमुख पर्यटन स्थल बन सकता है ।

❐❐❐

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

वर्ष 2012-13 के दौरान महालेखाकार (सा.एवं सा.क्षे.लेप.) कार्यालय, ओड़िशा, भुवनेश्वर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें महालेखाकार (सा.एवं सा.क्षे.लेप.) श्री अमर पट्टनायक की अध्यक्षता में दिनांक 21.05.2012, 17.08.2013, 04.02.2013, 17.04.2013 एवं 01.11.2013 को सम्पन्न हुई थी । इन बैठकों में श्री के. सी. बेहेरा -वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन), एवं श्री जि. चन्द्रप्रकाश - उपमहालेखाकार (प्रशासन), श्री दीपक रघु -उपमहालेखाकार - (सा.क्षे.-I/ प्रशासन), श्री एस. लक्ष्मीनरसिंहमन-उपमहालेखाकार (सा.क्षे.-I/सा.क्षे.-II), श्री गौतम चौधरी-उपमहालेखाकार (सा.क्षे.-II), श्री ए. सुब्रमनियम -उपमहालेखाकार, (साक्षे-II/सा.क्षे.लेप.), श्री च.बीरराघवन-उपमहालेखाकार (सा.क्षे.-III) । महालेखाकार (आ.एवं रा.क्षे.लेप.) कार्यालय, ओड़िशा, भुवनेश्वर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें महालेखाकार श्री सौभाग्य रंजन धल की अध्यक्षता में दिनांक 03.08.2012, 11.12.2012, 05.02.2013, 03.05.2013, एवं 28.08.2013 को संपन्न हुई थी । इन बैठकों में श्री विधान मण्डल -उपमहालेखाकार (प्रशासन) एवं श्री ओ.के. कुमारन -उपमहालेखाकार (प्रशासन) उपस्थित थे ।

हिन्दी कार्यशाला

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु दिनांक 28.01.2013, 29.01.2013 एवं 30.01.2013 तीन दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का उदघाटन श्री अमर पटनायक, महालेखाकार (सा. एवं सा.क्षे.लेप.) द्वारा दिनांक 28.01.2013 को पूर्वाह्न 11.00 किया गया । इस उद्घाटन समारोह में उपमहालेखाकार (प्रशासन) श्री जि. चन्द्रप्रकाश उपस्थित थे ।

यह कार्यशाला कुल 08 घण्टे के लिए वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार रखी गयी थी । इस कार्यक्रम के अनुसार 25 कर्मचारियों को प्रशिक्षण हेतु विभिन्न शाखाओं द्वारा नामित किया गया था । कर्मचारियों ने इस प्रशिक्षण में बढ़-चढ़कर भाग लिया था । कार्यशाला में विभिन्न विषयों जैसे राजभाषा नीति व नियम, सामान्य व्याकरण ज्ञान व नियम, मसौदा लेखन व अर्धसरकारी पत्र, हिन्दी टिप्पण व प्रारूप लेखन, लिंग निर्धारण व अनुवाद, एवं लेखापरीक्षा में प्रयुक्त शब्दावली आदि पर

प्रशिक्षण दिया गया । सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, हिन्दी कक्ष के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात दिनांक 30.01.2013 को सायं 5.00 बजे कार्यशाला सम्पन्न हुई ।

इसी भांति कार्यालय महालेखाकार (आ.एवं रा.क्षे.लेप.) ओड़िशा, भुवनेश्वर द्वारा दिनांक 25.02.2013 से 28.02.2013 तक चार दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का उद्घाटन श्री सौभाग्य रंजन धल, महालेखाकार (आ.एवंरा.क्षे.लेप.) महोदय द्वारा 25.02.2013 को पूर्वाह्न 11.30 बजे किया गया । इस उद्घाटन समारोह में उपमहालेखाकार (प्रशासन) श्री विधान मण्डल उपस्थित थे । कार्यशाला के दौरान हिन्दी में काम करने हेतु कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया । श्री पूर्णानन्द त्रिपाठी लेखापरीक्षा अधिकारी, हिन्दी कक्ष के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात दिनांक 28.02.2013 सायं 05.00 बजे कार्यशाला सम्पन्न हुई ।

कार्यालय समाचार

हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा समारोह -2013

हिन्दी पखवाड़ा-2013 उद्घाटन समारोह : राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता तथा उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), महालेखाकार / प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) एवं उपनिदेशक (केन्द्रीय राजस्व लेखापरीक्षा) के कार्यालयों द्वारा सम्मिलित रूप से हिन्दी पखवाड़ा-2013 का दिनांक 13.09.2013 को समारोह का शुभारम्भ कार्यालय के कैंटीन परिसर में बड़े धूम-धाम से सुश्री गार्गी कौल, प्र.म.ले (ले.एवं हक.) ओड़िशा, भुवनश्वर की अध्यक्षता में किया गया । मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री शशि मिंज, मुख्य आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद सीमा शुल्क भुवनेश्वर, को आमंत्रित किया गया था । स्वागत गान के बाद समारोह का शुभारंभ अध्यक्ष सुश्री गार्गी कौल, प्र.म.ले. (ले. एवं हक.), श्री अमर पटनायक, म.ले. (सा. एवं सा.क्षे.लेप.), श्री सौभाग्य रंजन धल, म.ले. (आ.एवं रा.क्षे.लेप.) एवं मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्ज्वलित किया । इसके बाद श्री आर.एन. चन्दा ने माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा जारी किए गए संदेश का पठन किया तथा पखवाड़ा के दौरान होने वाले कार्यक्रमों की सूचना दी । बाद में प्रधान महालेखाकार (ले.एवं ह.), अध्यक्ष महोदया तथा मुख्य अतिथि ने अपने अभिभाषण में

हिन्दी के महत्व को रेखांकित किया । श्री राम बालक पासवान - सहायक निदेशक/हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि के धन्यवाद प्रस्ताव से उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ ।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह : दिनांक- 13.09.2013 से 26.09.2013 तक हिन्दी पखवाड़ा समारोह का पालन किया गया । इस दौरान कार्यालय में विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । पखवाड़ा के दौरान ही तीनों कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से हिन्दी प्रश्न मंच प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया । दिनांक 26.09.2013 को पूर्वाह्न 10.30 बजे भुवनेश्वर स्थित जयदेव भवन में हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया । इस समारोह में भुवनेश्वर के मुख्य आयकर आयुक्त श्री एस.के. श्रीवास्तव, मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई । श्री सुनील दाढे, प्र.म.ले. (आ.रा.क्षे.लेप.) ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की । अतिथियों के आसन ग्रहण करने के बाद, सभी के लिए स्वागत गान किया गया, तत्पश्चात अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ । स्वागत भाषण के पश्चात प्र.म.ले. (ले.एवं ह.) कार्यालय द्वारा हिन्दी पत्रिका ''वातायन'' का विमोचन किया गया तथा अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों द्वारा अभिभाषण दिया गया । वरि. उपमहालेखाकार, श्री एस.बी.पाटिल ने मुख्य अतिथि एवं आमंत्रित अतिथि एवं उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद दिया । सबसे अंत में नाटक ''एक तारा बोले'' का मंचन किया गया एवं पुरस्कार वितरण तथा जलपान दिया गया ।

❐❐❐